विशेषांक : शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती एवं कुम्भ महापर्व, हरिद्वार-2021

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 फरवरी 2021

वर्ष : 33, अंक : 15

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 27 जनवरी 2021

वार्षिक चंदा : ....₹60/-

वार्षिक चंदा (विदेश) :.....₹ 800/-

प्रति अंक : ....₹ 3/-

E-mail:
news.shantikunj@gmail.com

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

ईश्वर का स्वरूप और उससे सम्बन्ध

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य । संस्कृति संजीवनी श्रीमद्भागवत एवं गीता', पृष्ठ 5.14 से संकलित, संपादित

भ्रम-भ्रान्तियों से उबरें

ईश्वर-विश्वास मनुष्य जीवन की सार्थकता और सुव्यवस्था के लिए बहुत आवश्यक है। यों तो सामान्य नैतिक सिद्धान्तों पर आस्था रखते हुए भी मनुष्य नेक जीवन जी सकता है, अपने व्यक्तिगत उत्कर्ष और सामाजिक उन्नति में सफल योगदान दे सकता है, लेकिन ईश्वर-विश्वास के अभाव में वह कभी भी भटक सकता है। एक सर्वव्यापी सर्वसमर्थ न्यायकारी सत्ता के रूप में ईश्वर की मान्यता मनुष्य को आदर्शनिष्ठ, समाजनिष्ठ तथा विकासोन्मुख रखने में उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

आस्तिकता को आज उपेक्षाणीय और निरर्थक इसलिए माना जाने लगा है कि ईश्वर के सम्बन्ध में बड़ी भ्रान्त मान्यताएँ फैला दी गई हैं। लोग यह समझने लगे हैं कि ईश्वर हम जैसा ही कोई निकृष्ट मनोभूमि वाला व्यक्ति है, जो थोड़ी-सी खुशामद से प्रसन्न हो जाता है या पूजन स्तुति करने वालों से सन्तुष्ट हो जाता है। आज आस्तिक कहलाने वालों की गतिविधियों को देखकर यही निष्कर्ष निकलता है। लेकिन विवेक कहता है कि ऐसी अनैतिक सत्ता ईश्वर तो नहीं हो सकती, शैतान भले हो।

वह सर्वव्यापी है

चूँकि ईश्वर सामान्य दृष्ट से दिखाई नहीं देता, इसलिए लोग उसे भूल जाते हैं। ईश्वरपरायण व्यक्ति भी उसे मन्दिरों और पूजा स्थलों तक ही सीमित मान लेते हैं। ऐसे सीमाबद्ध भगवान से किसी श्रेष्ठ लाभ की आशा कैसे की जा सकती है? यदि भगवान् पर आस्था रखनी ही है, तो उसे सर्वत्र तथा सर्वव्यापी के रूप में ही मानना चाहिए। स्वायंभू मनु अपनी तपस्या के समय अपने आपको उद्बोधन देते हुए कहते हैं–

वृत्तियों यं न पश्यति चक्षुर्यस्य न रिष्यति।
तं भूतनिलयं देवं सुपर्णमुपधावत।।

भगवान् सबके साक्षी हैं। उन्हें बुद्धि-वृत्तियाँ या नेत्र आदि इन्द्रियाँ नहीं देख सकतीं, परन्तु उनकी ज्ञानशक्ति अखण्ड है। सामान्य प्राणियों के हृदय में रहने वाले उन्हीं स्वयंप्रकाश अखण्ड परमात्मा की शरण ग्रहण करो।

भ्रमवश लोग यह मानते हैं कि ईश्वर कोई विभिन्न व्यक्ति का नाम है जो किसी को अधिक प्यार करता है, किसी को कम। लेकिन यह धारणा गलत है। भगवान शिव देवी पार्वती को यह मर्म समझाते हुए कहते हैं–

न ह्यस्यास्ति प्रियः कश्चनाप्रियः स्वः परोऽपि वा।
आत्मत्वात्सर्वभूतानां सर्वभूतप्रियो हरिः।।

भगवान को न कोई प्रिय है और न अप्रिय। उनका न कोई अपना है, न पराया। वे सभी प्राणियों के आत्मा हैं, इसलिए सभी प्राणियों के प्रिय हैं।

वह न्यायकारी है

कुछ लोग ईश्वर को करुणानिधान, कृपानिधान तक मानकर ही रह जाते हैं। यह मान्यता सत्य होते हुए भी एकांगी है। वे धर्माचरण करने वाले के लिए कृपालु, करुणासागर और दीनदयाल हैं तो अधर्म पर चलने वाले को दण्ड भी देते हैं। सज्जन व्यक्ति उनकी करुणा और दया का लाभ पाते हैं और दुष्ट उनकी न्याय व्यवस्था के अनुसार दण्ड पाते हैं। सज्जनों के लिए वे हर्ष देने वाले और असज्जनों के लिए वे भय का कारण हैं।

भगवान् का कार्य केवल सृष्टि ही नहीं, संहार भी है। उन्हें छला नहीं जा सकता। चापलूसी से समझदार व्यक्ति भी प्रसन्न नहीं होते, फिर अन्तर्यामी भगवान को स्तुतियों द्वारा प्रसन्न कर उनसे यह उम्मीद करना कि वे मेरे लिए न्याय की मर्यादा छोड़ देंगे, हास्यास्पद ही कहा जाएगा। ईश्वर कभी भी अपनी मर्यादा नहीं छोड़ता।

वह विराट् है, कण-कणवासी है

भगवान् के सम्बन्ध में भ्रान्तियाँ इसलिए पैदा हो जाती हैं कि उन्हें शक्ति रूप से नहीं, व्यक्ति रूप से मानने लगते हैं। ईश्वर चेतना रूप है, किन्तु यदि उनका स्थूल रूप ही देखना है तो इस विश्व को ही उनका स्वरूप माना जा सकता है। शुकदेव जी परीक्षित को समझाते हुए कहते हैं–

विशेषस्तस्य देहोऽयं
स्थविष्ठश्च स्थवीयसाम्।
यत्रेदं दृश्यते विश्वं भूतं
भव्यं भवच्च सत्।।

हे राजन्! यह कार्यरूप सम्पूर्ण विश्व जो कुछ कभी था, है या होगा, सबका सब जिसमें दीख पड़ता है, वही भगवान का स्थूल और विराट् शरीर है।

भगवान् के इसी विराट् स्वरूप की ही उपासना सर्वश्रेष्ठ लोगों ने सदा की है। अर्जुन को भी भगवान् ने अपना यही विराट रूप दिखलाया था और माता यशोदा को भी। काकभुशुण्डि जी और कौशल्या को भी भगवान राम के इसी रूप के दर्शन हुए थे। उन्हें श्रेष्ठ प्रवृत्तियों के रूप में समझना तथा अपनाना सबसे अधिक लाभप्रद है।

श्रेष्ठ प्रवृत्तियों और भावनाओं के रूप में भगवान को स्वीकार लिया जाए तो वे जिस प्रकार अपने अन्दर अनुभव होते हैं, उसी प्रकार अन्य व्यक्तियों में भी उनकी आभा दिखाई देती है। दूसरों के अन्दर स्थित सत्प्रवृत्तियों का सम्मान ईश्वर का ही सम्मान है। जो द्वेषवश दूसरों के दोषों को ही महत्त्व देते और उनका असम्मान करते हैं, वे ईश्वर का ही असम्मान करते हैं।

प्रतिमा-पूजन ही नहीं, प्रेरणा भी?

मनुष्य ईश्वर को सूक्ष्म रूप से नहीं समझ पाता। किसी स्थूल वस्तु के माध्यम से सुगमता से समझ लेता है। इसी के लिए ऋषियों ने विभिन्न प्रतिमाएँ बनाईं। उनके माध्यम से ईश्वरीय आदर्शों की प्रेरणा मनुष्यों को मिल सकती हैं। किन्तु यदि प्रतिमाओं को ही सब कुछ मान लिया जाय, प्राणियों में व्याप्त ईश्वर की उपेक्षा की जाय तो साधक को लाभ नहीं मिल सकता।

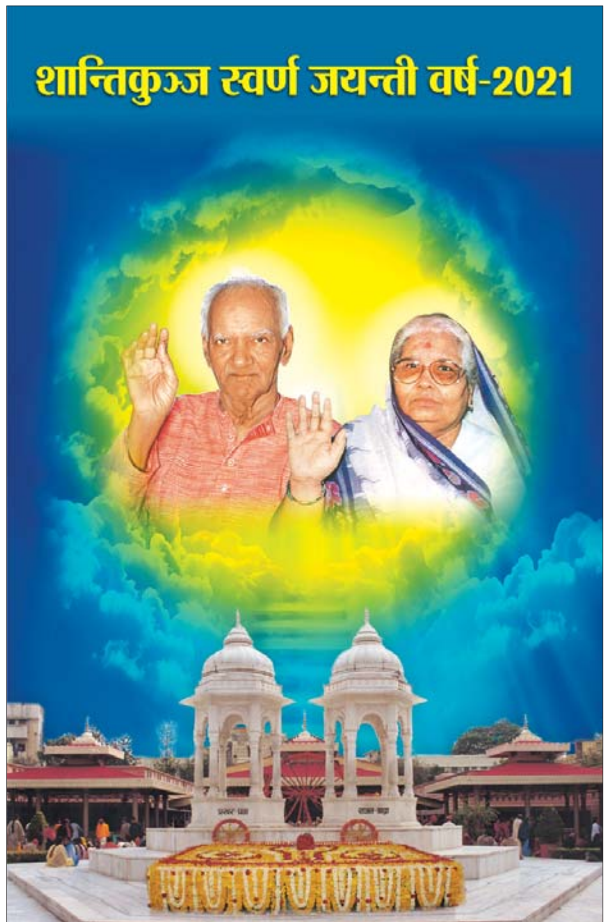

विधि-विधान महत्त्वपूर्ण हैं। पूजन भी फलप्रद है। पर विधि-विधान किसके लिए? पूजन किसका? मूर्ति के आकार का या उसमें प्रतिष्ठित प्राण का, चेतना का? यदि आकार मात्र का पूजन हो रहा है तो वह चेतना क्या सिर्फ उस मूर्ति में सीमित है? जीवों के भीतर भी तो वही चेतना है। अतः जीवों का अपमान भी उसी चेतना का ही अपमान हुआ। तो अपने ही अपमान से देवता या ईश्वर भला कैसे प्रसन्न हो सकते हैं? इसलिए सिर्फ प्रतिमा के पूजन का अर्थ है समस्त जीवों में भरी ईश्वरीय चेतना की उपेक्षा।

भगवान् कपिल इस बात को और भी स्पष्ट करते हुए कहते हैं–

यो मां सर्वेषु भूतेषु सन्तमात्मानमीश्वरम्।
हित्वार्चां भजते मौढ्याद्भस्मन्येव
जुहोति सः।।

मैं सबका आत्मा, परमेश्वर सभी भूतों में स्थित हूँ। ऐसी दशा में जो मोहवश मेरी उपेक्षा करके केवल प्रतिमा के पूजन में ही लगा रहता है, वह तो मानो भस्म में ही हवन करता है।

भस्म निर्जीवता का प्रतीक है। हवन का लाभ अग्नि से ही मिल सकता है। इसी प्रकार प्रतिमा के माध्यम से यदि सर्वव्यापी परमात्मा पर आस्था नहीं बढ़ती तो प्रतिमा पूजन का कोई लाभ नहीं, बल्कि समय और साधन नष्ट ही होते हैं।

ईश्वर और धर्म का स्वरूप

निराकार ईश्वर साकार रूप से अवतार लेकर भी जनकल्याण के उद्देश्य से ही आते हैं। उनके चरित्र देखकर लोग प्रेरणा लेते रहें, यही अवतार का उद्देश्य होता है। वैसे श्रेष्ठ प्रवृत्तियों के रूप में उन्हें सदैव ही प्रकट किया और अपनाया जा सकता है। देवी सती के पिता दक्ष प्रजापति से उनका यज्ञ विध्वंस हो जाने के बाद भगवान विष्णु स्पष्ट रूप से कहते हैं–

तपो मे हृदयं ब्रह्म तनुर्विद्या क्रियाऽऽकृतिः।
अङ्गानि क्रतवो जाता धर्म
आत्मासवः सुराः।।

ब्रह्मन्! तपस्या मेरा हृदय है, विद्या शरीर है, कर्म आकृति है, यज्ञ अंग है, धर्म मन है और देवता प्राण है।

तपस्या आत्मपरिष्कार, आत्मविकास अथवा जनकल्याण के लिए अपनाए गए कष्टपूर्ण जीवन क्रम को कहते हैं। विद्या मात्र अक्षर ज्ञान नहीं। सही दिशा जिससे मिल सके, वही विद्या है। कर्म तो जीवन का अभिन्न अंग है। यज्ञ कहते हैं लोककल्याण के लिए दिये जाने वाले योगदान को, किये जाने त्याग-बलिदान को। धर्म कर्तव्यपरायणता तथा सदाचार है। देवता वे हैं जो दूसरों के हित में, दूसरों को सहयोग अनुदान देने में ही लगे रहते हैं। जीवन में यह सब प्रवृत्तियाँ आने लगें तो समझना चाहिए ईश्वर का प्रकाश अपने अन्दर आ रहा है। भजन, पूजन, तीर्थसेवन, सेवा आदि सभी क्रम इसी उद्देश्य से किए जाते हैं।

नवयुग की ज्ञानगंगोत्री शान्तिकुञ्ज का स्वर्ण जयन्ती वर्ष-2021

स्रष्टा का शाश्वत संकल्प है- **यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानम अधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम्।।** श्रीमद् भगवद्गीता

इस युग में जब मानवता हा-हाकार कर रही है, पर्यावरण से लेकर परमाणु बम के जखीरे तक जीवन के अस्तित्व को चुनौती दे रहे हैं, मानवीय दुर्भाव अपने चरम पर है, संवेदनाएँ सूख चुकी हैं, ऐसी विकराल परिस्थितियों में एक ऋषितुल्य देवमानव वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के माध्यम से परमात्मा की वही दिव्य योजना चरितार्थ हो रही है, जिसे उन्होंने नाम दिया है-युग निर्माण योजना। किसी रणभूमि पर नहीं, बल्कि मानवीय बुद्धि में इस युग का महाभारत लड़ा जा रहा है। सद्ज्ञान एवं सद्विचारों से दुर्विचारों एवं दुर्भावों पर विजय के लिए जिस भूमि पर स्रष्टा की दिव्य चेतना और उसकी योजना का अवतरण हुआ है वह है इस युग की ज्ञान गंगोत्री-गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज।

> शान्तिकुञ्ज द्वारा संचालित युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की 'युग निर्माण योजना' महाकाल की प्रेरणा और ऋषियों की योजना है। यह सत्पुरुषों और जाग्रत् आत्माओं के माध्यम से धरती पर उतारी जा रही है।

इस युग में जब मानव तो क्या जीवन के अस्तित्व को ही चुनौती दी जा रही हो, तमाम वैज्ञानिकों, बुद्धिजीवियों, राजनीतिज्ञों को कोई समाधान नहीं सूझ रहा हो, ऐसी परिस्थितियों में आज से पचास वर्ष पूर्व ही युगद्रष्टा पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने 'इक्कीसवीं सदी, उज्ज्वल भविष्य' का उद्घोष किया था। उन्होंने आज से 40 से 50 वर्ष पूर्व ही कह दिया था कि दुनिया नष्ट नहीं होगी, बल्कि और बेहतर होने जा रही है। पूज्य आचार्य जी ने उन दिनों कहा था-भविष्य में एक राष्ट्र, एक धर्म की स्थापना होगी। राष्ट्रों की सीमाओं का नए सिरे से निर्धारण होगा। धन पर किसी का एकाधिकार नहीं रहेगा। इक्कीसवीं सदी नारी सदी होगी। हम राष्ट्राध्यक्षों के विचारों को बदलेंगे। हमारे विचार क्रान्ति के बीज हैं वे जहाँ पहुँचेंगे वहाँ परिवर्तन अवश्यंभावी है। कोई व्यक्ति नहीं, एक दैवी चेतना ही ऐसा उद्घोष कर सकती है।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी मात्र व्यक्ति नहीं, हाड़-मांस की काया में निहित एक महाशक्ति थे, जिन्होंने परमात्मा के दैवी संकल्प को साकार करने के लिए उसकी दैवी योजना धरती पर अवतरित की। वे ब्रह्मर्षि वशिष्ट, महर्षि विश्वामित्र एवं ऋषि भगीरथ जैसे प्रचण्ड तप के बल पर उस दैवी चेतना को इस धरा पर अवतरित करने का माध्यम बने। यह तप उन्होंने अपनी जन्मभूमि आँवलखेड़ा, जिला आगरा (उत्तर प्रदेश) तथा महर्षि दुर्वासा की तपःस्थली मथुरा में किया। अपने इसी तपोबल से गायत्री और यज्ञ को तमाम प्रतिबन्धों से मुक्त कराकर जन-जन के लिए सुलभ कराया। देवराहा बाबा, करपात्री जी महाराज, महात्मा आनन्द स्वामी जैसे महापुरुषों का कथन है कि अगर आचार्य जी न आते तो गायत्री विलुप्त हो गई होती।

> वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचार ही नवयुग सृजन का आधार बनने जा रहे हैं।

अपने तपोबल से आचार्य जी ने भागवत चेतना को अवतरित करने का सरंजाम तो जुटा लिया, लेकिन उसे जन-जन तक प्रवाहित करने के लिए जो नवसृजन अभियान चलाया जाना था, उसके लिए हरिद्वार स्थित महर्षि विश्वामित्र की तपःस्थली को चुना। गंगा की गोद, हिमालय की छाया, महर्षि विश्वामित्र सहित सप्तऋषियों की इस तपोभूमि पर सन् 1971 में 'शान्तिकुञ्ज' का निर्माण कराया।

शान्तिकुञ्ज की स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। युगऋषि के तपोबल और सूक्ष्म जगत में सक्रिय युगचेतना का दिव्य प्रभाव पूरे विश्व में स्पष्ट दिखाई दे रहा है। आज इक्कीसवीं सदी की इस ज्ञान गंगोत्री का दिव्य प्रवाह विश्व के करोड़ों लोगों के जीवन में प्रवाहित हो रहा है। पिछले 50 वर्षों में लोगों के विचार और मान्यताओं में आमूलचूल परिवर्तन हुए हैं। यह सच है कि नवसृजन की धाराएँ अनेक जगहों से फूटेंगी, फूट रही हैं, लेकिन उसके पीछे वही दैवी योजना सक्रिय दिखाई देती है, जिसने पूज्य आचार्य जी को युग परिवर्तन का माध्यम बनाया है।

शान्तिकुञ्ज का स्वर्ण जयंती वर्ष-2021 अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। सौभाग्य और संयोग कुछ ऐसा है कि हरिद्वार का महाकुम्भ भी इसी वर्ष है। धर्म-अध्यात्म, संस्कृति एवं नवसृजन अभियान को प्रोत्साहित करने वाले इस महाकुम्भ ने युगगंगोत्री को जन-जन तक प्रवाहित कर सगरसुतों की तरह मूर्छित पड़ी हताश, निराश मानवता में नवप्राणों के संचार का अभूतपूर्व अवसर प्रदान किया है।

अगले पृष्ठों पर शान्तिकुञ्ज और उसकी गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है। इसे ध्यान से पढ़कर युग परिवर्तन के लिए अवतरित दैवी योजना के, महाकाल के सहयोगी बनने वाले, नवसृजन अभियान में भाग लेने वाले निःसंदेह राम के रीछ-वानरों, कृष्ण के ग्वाल-बालों, बुद्ध के परिव्राजकों और गाँधीजी के सत्याग्रहियों की तरह अक्षय पुण्य , यश और सुख-सौभाग्य के अधिकारी होंगे।

महाकुम्भ के साये में इस वसन्त पर छाया है युगचेतना के विस्तार का अभूतपूर्व उल्लास

प्रौढ़ हो चले मिशन को साधक-वानप्रस्थ की मानसिकता के साथ घर-घर पहुँचाना होगा

सौभाग्य लेकर आया वसन्त पर्व

वसन्त पञ्चमी उमंगों का दिन है, प्रेरणा का दिन है, प्रकाश का दिन है। वसन्त के दिनों में उमंग आती है, उछाल आता है। समर्थ गुरु रामदास के जीवन में इन्हीं दिनों एक उछाल आया-क्या हम अपनी जिन्दगी का बेहतरीन इस्तेमाल नहीं कर सकते? क्या हमारी जिन्दगी अच्छी तरह से खर्च नहीं हो सकती? एक तरफ उनके विवाह की तैयारियाँ चल रही थीं। समर्थ गुरु रामदास को शक्ल दिखाई पड़ी, औरत, औरत के बच्चे, बच्चे के बच्चे, शादियाँ, ब्याह आदि की बड़ी लम्बी श्रृंखला दिखाई पड़ी। दूसरी तरफ आत्मा ने संकेत दिया, परमात्मा ने संकेत दिया और कहा-अगर आपको अपनी जिन्दगी इतनी कम कीमत की नहीं जान पड़ती है, अगर आपको महँगी मालूम पड़ती है तो आइये, दूसरा वाला रास्ता आपके लिए खुला पड़ा है। महानता का रास्ता खुला हुआ पड़ा है। समर्थ गुरु ने विचार किया, उछाल आया, उमंग आई और ऐसी उमंग आई कि रोकने वालों से रुकी नहीं। वह उछलते ही चले गए। मुकुट को फैंका अलग और कंगन को तोड़ा अलग। ये गया, वो गया, लड़का भाग गया। दूल्हा कौन हो गया? समर्थ गुरु रामदास हो गया। कौन? मामूली-सा आदमी छोटा-सा लड़का छलाँग मारता चला गया और समर्थ गुरु रामदास होता चला गया। ....

वसंत पंचमी के दिन हर एक का सौभाग्य आता है, एक उमंग आती है, एक तरंग आती है। मेरे ऊपर भी एक तरंग आई सौभाग्य के दिन मेरे गुरु के रूप में, मास्टर के रूप में। मेरा भी गुरु, मेरा भी बॉस, मेरा भी मास्टर और मेरा भी सौभाग्य इसी वसन्त पंचमी के दिन आया था, जिसमें कि हम और आप मिल रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि जो सौभाग्य की धारा और लहर मेरे पास आई थी, काश! आपके पास भी आ जाती तो आप धन्य हो जाते। (पूज्यवर की अमृतवाणी, भाग-1 से)

परम पूज्य गुरुदेव का यह उद्बोधन वसन्त पञ्चमी के दिन ही था। वसन्त पञ्चमी उनके जीवन में भागवत चेतना के अवतरण का दिन है। सन् 1926 में वसन्त पञ्चमी के दिन ही उनकी पूजा की कोठरी में दिव्य प्रकाश के रूप में उनकी मार्गदर्शक सत्ता (स्वामी सर्वेश्वरानंद जी) प्रकट हुई थी। इस दिन को वे अपना आध्यात्मिक जन्मदिवस मानते हैं और हम सब उसे बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं। वे अपने बच्चों-अनुयायियों को भी महानता के इस पथ पर चलने की, जीवन के सौभाग्य का वरण करने की प्रेरणा सतत् देते रहे हैं।

युगचेतना का भागीरथी अभियान

पौराणिक कथा है कि राजा सगर के 60,000 पुत्र अपने अहंकारवश कपिल मुनि के शाप से भस्म हो गए थे। उनके उद्धार के लिए स्वर्ग से सुरसरि को धरती पर उतारकर भस्म हुए सगर-सुतों को उनका स्पर्श कराना ही उनके उद्धार का एकमात्र उपाय था। राजा सगर की कई पीढ़ियों ने गंगा को अवतरित करने के लिए तप किया। आखिर भगीरथ की कठोर तप साधना सफल हुई। माँ गंगा तो स्वर्ग से धरती पर आने के लिए और भगवान शिव गंगा को अपनी जटाओं में धारण करने के लिए सहमत हुए। शिवजी ने कहा, भगीरथ तुम आगे चलो, जहाँ-जहाँ तुम जाओगे, गंगा तुम्हारे पीछे-पीछे आती जाएगी। ऋषि भगीरथ के तप के प्रभाव से स्वर्ग से अवतरित माँ गंगा ने सगर-सुतों का स्पर्श कर उनका उद्धार किया।

परम पूज्य गुरुदेव ने क्रान्तिधर्मी साहित्य श्रृंखला के अन्तर्गत एक पुस्तक लिखी-इक्कीसवीं सदी की ज्ञान गंगोत्री। इसमें वे कहते हैं, बेटा! हमने भी देवगंगा को धरती पर लाने का प्रयास किया है। हमने वेदों का, देवों का संदेश घर-घर तक पहुँचाने का प्रयास किया है। इसके लिए उन्होंने सन् 1971 में शान्तिकुञ्ज की स्थापना की थी। शान्तिकुञ्ज मात्र लोहा, लकड़ी, ईंट, पत्थरों से बना भवन नहीं है, युगऋषि के तपोबल की बुनियाद पर निर्मित वह सिद्धभूमि है, एक दैवी अभियान है जो हर साधक-श्रद्धालु को स्पंदित एवं अनुप्राणित कर रही है।

शान्तिकुञ्ज नवयुग की गंगोत्री है। यहाँ युगऋषि द्वारा उन जाग्रत् आत्माओं को तलाशा, तराशा जा रहा है जो उनके द्वारा अवतरित ज्ञानगंगा को, गायत्री और यज्ञ को, आत्मबल-विवेक-साहस-सद्भाव को घर-घर प्रतिष्ठित करने में अग्रदूतों की भूमिका निभा रहे हैं। लाखों युगसृजेताओं ने इस ज्ञानगंगा को पूरे विश्व में पहुँचाया है। उनके तप, संकल्प और पुरुषार्थ ने न केवल करोड़ों लोगों का जीवन बदला है, अपितु सूक्ष्म जगत को भी प्रभावित किया है।

आत्मचिंतन-आत्मबोध का पर्व है वसन्त

वसन्त पंचमी आत्मचिंतन, आत्ममनन, आत्मबोध का पर्व है। शान्तिकुञ्ज की स्थापना के 50 वर्ष पूरे हो रहे हैं। भारतीय संस्कृति में पचास वर्ष पूरे होने पर सांसारिक जिम्मेदारियों को कम करते हुए लोकमंगल की दिशा में बढ़ने का विधान है। अपना मिशन भी अब प्रौढ़ हो चला है। समय की माँग है कि हम इसकी प्रौढ़ता के अनुरूप अपनी साधना को प्रखर बनाएँ। साधना से निखरे व्यक्तित्व के साथ प्रामाणिक, उदार, आदर्शनिष्ठ जीवन जीते हुए युगऋषि की ज्ञानगंगा को घर-घर पहुँचाने वाले परिव्राजक की भूमिका निभाएँ।

इस वसन्त की वेला में 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान के माध्यम से अमृत कुम्भ के साथ युगचेतना को 10 लाख से अधिक घरों में स्थापित करने और उसे पूरे विश्व में फैलाने का जो उत्साह है वह अद्भुत है, अद्वितीय है। इसे निरन्तर बढ़ाते रहने और अधिक से अधिक उद्देश्यपूर्ण बनाते रहने की आवश्यकता है। आत्मचिंतन, आत्ममंथन, आत्मबोध की इस वेला में हमें अपने जीवन में कुछ मान्यताएँ दृढ़ कर लेनी चाहिए, तभी यह संभव है, जैसे-

- हम जन्म-जन्मांतरों से प.पूज्य गुरुदेव के साथ हैं, जो युग परिवर्तन जैसे विशिष्ट अवसरों पर उनके सहयोगी बनकर जन्म लेते रहे हैं। शरीर और निजी परिवार का पालन-पोषण ही हमारे लिए सबकुछ नहीं है। युग निर्माण की ईश्वरीय योजना में हमारी बढ़-चढ़कर भागीदारी होनी ही चाहिए।
- हमारा मिशन एक दैवी मिशन है। यह सत्य अनेक घटनाओं के माध्यम से प्रमाणित होता रहा है। सुख-दुःख से कोई अछूता नहीं रहा, यहाँ तक कि संत, महात्माओं और स्वयं भगवान को भी कष्ट भोगने पड़े हैं। लेकिन गुरुसत्ता ने अपने स्वजनों का ध्यान रखने का जो आश्वासन दिया है, उसे पूरा होते अनेकों ने देखा है। उनका स्नेह-संरक्षण सदैव हमारे साथ है। साहसपूर्वक बढ़ते कदमों को दैवी शक्तियों का सहयोग-संरक्षण मिलता ही है।
- पेट-प्रजनन तक के पशुवत जीवन तक सीमित रहना हमें शोभा नहीं देता। जीवनोपयोगी आवश्यकताओं को पूरा करने के अतिरिक्त हमें अपना अधिक से अधिक समय भगवान के कामों में लगाना ही चाहिए। परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताये सूत्र-उपासना, साधना, आराधना, समयदान, अंशदान, सेवा, स्वाध्याय आदि का समावेश हमारे जीवन में होना ही चाहिए।
- स्वर्ण जयन्ती वर्ष के पहले चरण 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' का हमारा लक्ष्य स्पष्ट रहे। हम केवल गंगाजल, पुस्तक, देवस्थापना चित्र की स्थापना करने ही घर-घर नहीं जा रहे। अगले चरणों में भी उन घरों से सम्पर्क बनाए रखना होगा, ताकि वे भी युग परिवर्तन की ईश्वरीय योजना में साझेदार बनने का सौभाग्य प्राप्त कर सकें।
- गुरुसत्ता के स्नेह, संरक्षण, आश्वासन पर विश्वास रख 'मानव मात्र एक समान' के उद्घोष के अनुरूप हर वर्ग तक मिशन को पहुँचाने के साहसी कदम बढ़ाये जायें।

धर्मो रक्षति रक्षितः

धर्म की रक्षा करो, धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा

समय की माँग है कि हम केवल स्नान-दान, पूजा-पाठ, व्रत-अनुष्ठान, भजन-कीर्तन जैसे कर्मकाण्डों से ही पुण्य कमाने और भगवान को पा लेने की मानसिकता से ऊपर उठें, धर्म को सही अर्थों में जीवन में धारण करें।

धर्म वह वस्तु है, जिसकी रक्षा करने से समाज की रक्षा होती है। धर्म मात्र पूजा-पाठ या स्नान-ध्यान, मंदिर दर्शन, तीर्थयात्रा, अनुष्ठान जैसे कर्मकाण्डों तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि जीवन के उन शाश्वत सिद्धांतों को जीवन में धारण करना धर्म है, जिससे मनुष्य में देवत्व का उदय होता है। सत्यनिष्ठा, प्रेम, न्यायनिष्ठा, सादगी, सज्जनता, उदारता, शालीनता, परोपकार, अहिंसा, अपरिग्रह जैसे सद्गुणों को व्यक्तित्व में धारण करना धर्म है। देवदर्शन, यज्ञ, तीर्थयात्रा, उपासना, सेवा जैसे कर्मकाण्ड इन्हें धारण करने की प्रेरणा ग्रहण करने के और उनका अभ्यास करने के साधन हैं। इनके सतत अभ्यास से व्यक्ति धर्मनिष्ठ होता जाता है।

धर्म धारणा से मनुष्य में देवत्व का उदय होता है। मनुष्यों से ही समाज बनता है। धर्म की रक्षा तभी संभव है जब समाज का हर व्यक्ति धर्म की, सिद्धांतों की रक्षा करने लगे। हर मनुष्य में देवत्व का उदय होगा तो समाज की समस्याओं का समाधान होना और धरती पर स्वर्ग की सृष्टि होना अवश्यंभावी है। हम धर्म की रक्षा करेंगे, तो धर्म हमारी रक्षा करेगा।

संसार में जितनी भी कष्ट-परेशानियाँ हैं, वे इसलिए हैं कि लोग धर्म को ताक पर रखकर केवल चिह्न पूजा करने लगे हैं। कुछ ओछी और स्वार्थी मनोवृत्ति के लोग भी धर्मक्षेत्र में घुस पड़े हैं, जो भोले-भाले लोगों की धार्मिक आस्थाओं का दोहन कर रहे हैं। धर्मगुरुओं में जहाँ अधिकांश श्रेष्ठ पुरुष थे और धर्म की रक्षा करने वाले उपदेश दिया करते थे, वहीं ऐसे नकली लोग भी धर्मगुरुओं में शामिल हो गए और व्यक्तिगत लाभ की प्रेरणा से नकली बातों को धर्म में जोड़ दिया। कालान्तर में असली और नकली बातें ऐसी शक्ल में आ गईं कि यह पहचानने में कठिनाई होती है कि हमारे सामने धर्म का जो स्वरूप उपस्थित है उसमें कितनी बातें असली हैं, कितनी नकली।

आइये! धर्म का मर्म समझने का प्रयास करें और धर्म को उसके सच्चे स्वरूप में जीवन में धारण करने के लिए तत्पर हों, क्योंकि धर्म की रक्षा से ही हमारी रक्षा संभव है। निम्न जानकारियाँ इस कार्य में बड़ी उपयोगी सिद्ध होंगी, ऐसी आशा है।

धर्म कल्याणकारी है

भगवान् की इच्छाः भगवान् ने मनुष्य को बनाते समय यह अपेक्षा रखी थी वह अपना स्वयं का ऐसा मर्यादापूर्ण आदर्श जीवन बनाये, जिससे स्वयं उसका जीवन सफल हो जाये। वह अपने परिवार, समाज व युग को भी अपने कृत्यों से, अपने आचरणों से व्यवस्थित बनाये रखे। इस दृष्टि से धर्म का लक्ष्य मनुष्य में शिवत्व का विकास है।

धर्म एक ही है, मानव धर्म : धर्म सार्वभौम है। पूरे विश्व का धर्म एक ही है, जिसे हम विश्वधर्म , मानवधर्म आदि कुछ भी कह सकते हैं। धर्म का तो एक ही लक्ष्य है 'सत्य', 'शिव', 'सुन्दर'; अर्थात् ऐसे आचरण जो सत्य हों, शुभ हों, कल्याणकारक हों तथा सुन्दर हों। धर्म तो अपने स्थान पर स्थिर, अटल, शाश्वत है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः धर्म मानव, समाज और संस्कृति का मूल आधार है। इसी पर संसार का 'शुभ' और 'कल्याण' टिका हुआ है। धर्म एक अपरिवर्तनशील शाश्वत सत्ता है, सार्वभौम शक्ति है जिसका लक्ष्य है ''**सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया**।''

महर्षि वाल्मीकि के जीवन से सीखें

हमारा आचरण और कर्म धर्ममय हो

अपने परिवार के सदस्यों का पालन करने के लिए लूटपाट करने वाले दस्यु जीवन बिताने वाले वाल्मीकि ने एक बार सप्तऋषियों को पकड़ लिया। सप्तऋषियों ने पूछा, "भाई असहाय लोगों को इस तरह मारना, लूटना तो पाप है, तुम यह सब क्यों करते हो?"

इस पर वाल्मीकि ने उत्तर दिया, "अपने वृद्ध माता-पिता, पत्नी व सन्तान के पालन-पोषण करने के लिए यह तो मेरा धर्म है, जो मुझे करना ही पड़ता है। भला अपने पर आश्रित लोगों का पानल-पोषण करना क्या पाप है?"

इस पर सप्तऋषियों ने समझाया, "अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए दूसरों के हितों का हनन करना, अपना पेट भरने के लिए दूसरों को भूखों मारना, तड़पाना, अपनी पारिवारिक सुख-समृद्धि के लिए दूसरे परिवारों को कष्ट व असुविधा में डालना, बिना श्रम किए दूसरों का श्रमार्जित धन छीनकर उसका उपभोग करना धर्म नहीं माना जा सकता।"

वाल्मीकि को बात समझ में आई। वे सोचने लगे यह तो ठीक है कि वे मनुष्यों को मारकर, उनकी सम्पत्ति को छीनकर अपने आश्रितों का पेट भर रहे हैं, परन्तु इससे दूसरों का उत्पीड़न होता है इसलिए इसे धर्म नहीं माना जा सकता। इस प्रकार की अनुभूति ने वाल्मीकि को दस्यु से महर्षि बना दिया।

वाल्मीकि के जीवन में जब 'धर्म' का तत्त्व प्रविष्ट हुआ तो स्वयं उनका व्यक्तिगत परिष्कार तो हुआ ही, समाज की भी रक्षा हुई। जो दस्यु के रूप में समाज का उत्पीड़न करते थे, वे ही धर्म का साक्षात्कार कर धर्म को अंगीकृत कर करोड़ों मनुष्यों के मार्गदर्शक बन गए।

धर्म सागर है, सम्प्रदाय नदियाँ

धर्म के दो भाग हैं, पहला कलेवर और दूसरा प्राण। प्राण धर्म के वे शाश्वत सिद्धान्त हैं, जिसकी सत्ता सदैव एक जैसी रहती है। धर्म का अस्तित्व इस प्राणसत्ता पर ही टिका हुआ है। धर्म का कलेवर देश, काल, समय के अनुरूप परिवर्तनशील है। समय की माँग के अनुरूप इसमें परिवर्तन और परिष्कार होता भी रहना चाहिए।

संसार में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, पारसी, बौद्ध, ताओ, शिन्तो आदि धर्म के जो अलग-अलग नाम दिखाई देते हैं, उसका कारण उनका कलेवर ही है। इनके प्रवर्तकों ने धर्म की मूल भावनाओं को साथ रखकर आवश्यकतानुसार कुछ विशेषताओं को उभारा है, इसीलिए उनकी अलग पहचान बनी। क्रिश्चन धर्म प्रेम और सेवा को, जैन अहिंसा और अपरिग्रह को, बौद्ध विवेक को, मुस्लिम भाईचारे को, हिन्दू ज्ञान एवं भक्ति को प्रधानता देते हैं, लेकिन धर्म के मूल तत्त्वों का समावेश सभी में है।

इस्लाम शब्द 'सल्म' से निकला है, जो शांति या अमन का पर्याय है। वैदिक धर्म मानवमात्र को आत्मसत्ता का अभिन्न अंग मानने की प्रेरणा देता है। क्रिश्चियनेटी शब्द 'क्रिस्टास' शब्द से बना है जिसका अर्थ है ईश्वरीय ज्ञान में नहाया हुआ, अर्थात् मानवमात्र में एक सत्ता देखने वाला। शिन्तो का अर्थ है सब आत्माओं का एक परम पथ। इस प्रकार सभी धर्म मानवता के उत्थान और सामाजिक समरसता, सुख-शांति का संदेश देते हैं। आज उनके अनुयायियों में मतभेद दिखाई देते हैं, लेकिन उन प्रवर्तकों ने अपने को मानवतावादी ही माना है, धर्म के हर मूल तत्व को धारण किया है।

सम्प्रदाय : धर्म एक है, लेकिन लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अनेक मार्ग बना लिए गये हैं। ये धर्म नहीं, सम्प्रदाय हैं। हर सम्प्रदाय में अलग-अलग विधान-कर्मकाण्ड दिखाई देता है, उसका लक्ष्य एक है। वह है परमात्मा की प्राप्ति और मानवता का कल्याण।

धर्म महासागर है तो सम्प्रदाय नदियाँ, जो विभिन्न स्थानों ओर दिशाओं से आकर इस महासागर में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विलीन हो जाती हैं। लेकिन अज्ञानता, अहंकार और दुर्भाग्यवश लोग अपने-अपने सम्प्रदायों को ही श्रेष्ठ मानकर समाज में विग्रह पैदा करते दिखाई देते हैं। वे अपने धर्म-सम्प्रदाय को ही श्रेष्ठ सिद्ध करने और अन्यों पर थोपने पर तुले देखे जाते हैं। यदि नदियाँ अपने को ही सागर मान बैठें तो वे सागर तो नहीं हो जायेंगी।

कर्म और भाव का संयोग हो

धर्म के दो स्वरूप हैं-एक क्रियात्मक और दूसरा भावनात्मक। श्रम, संयम, न्याय, सत्साहस आदि धर्म का क्रियात्मक, अर्थात् बाह्य स्वरूप है। सज्जनता, सरलता, सादगी, सहानुभूति, संवेदना, दया, करुणा, विवेक आदि वे दिव्य अनुभूतियाँ हैं, जिन्हें धर्म का भावनात्मक अथवा आभ्यांतरिक स्वरूप कहा जा सकता है। भावना यदि उपासना है तो क्रिया साधना। सदाचार धर्म का बाह्य स्वरूप है तो सद्भाव उसका आंतरिक स्वरूप।

धर्म में क्रिया और भाव दोनों का संयोग आवश्यक है। धन और ऋण विद्युत धाराओं की तरह जब तक वे सम्बद्ध नहीं होंगे, तब तक प्रकाश संभव नहीं। दोनों के समन्वय से ही धर्माचरण में पूर्णता आती है।

किसी व्यक्ति को दीन-हीन, असहाय स्थिति में देखकर हमारे मन में सहानुभूति और संवेदना के भाव तो उत्पन्न होते हैं, किन्तु उनकी सेवा-सहायता नहीं की जाती तो उसे धर्म का अपूर्ण आचरण माना जायेगा। इसी प्रकार कोई असद्भावना, अहंकार प्रदर्शन या नामवरी के लिए किसी की सेवा, सहायता करता है, किन्तु दुखी-पीड़ित जन के प्रति सच्ची सहानुभूति नहीं रहती, तो इस कार्य को भी धर्म का छद्म आचरण ही कहा जाएगा। धार्मिक जन यदि वास्तव में धर्म लाभ प्राप्त करना चाहते हैं तो पूर्ण धर्म का आचरण परमावश्यक है।

धर्म उपयोगी भी है और आवश्यक भी

धर्म जीवन का प्राण है। प्राणवायु के समान ही इसके बिना एक क्षण भी रह सकना संभव नहीं है। महात्मा टॉलस्टॉय ने अपनी पुस्तक 'धर्म क्या है?' में लिखा है- ''जो लोग धर्म को बहिष्कृत करके विज्ञान को ही अपने जीवन का पथ-प्रदर्शक बनाना चाहते हैं, वह बहुत बड़ी भूल करते हैं। भौतिक विज्ञान केवल उन बातों की ही समीक्षा करता है, जो वर्तमान काल में उपस्थित हैं, वह जीवन की आने वाली अगणित समस्याओं के समाधान की योग्यता नहीं रखता, क्योंकि वैज्ञानिक स्वयं इन प्रश्नों को अपनी सीमा से बाहर समझते हैं।''

वर्तमान समय में बौद्धिक वर्ग के कुछ व्यक्ति धर्म से नाक-भौं सिकोड़ने के दो कारण हैं-(1) धर्मतंत्र की विकृतियाँ और (2) अंधानुकरण की प्रवृत्ति। निःसंदेह धर्म के नाम पर फैले पाखण्ड ने सदियों तक लोगों को दिग्भ्रांत किया है। श्रद्धा के नाम पर तथाकथित धर्माचार्यों ने जनभावनाओं का दोहन किया है। विश्वास के नाम पर अंधविश्वास पनपा है।

धर्म के नाम पर उपद्रव, अत्याचार होता हो और रक्त की नदियाँ बहाई जाती हों तो उसे देखकर एक बुद्धिजीवी का धर्म से घृणा करना स्वाभाविक है। लेकिन विकृति को ही धर्म का स्वरूप मान लेना तो भारी भूल होगी। धर्म क्षेत्र में विकृतियों का कारण अधर्म है, न कि धर्म। कुछ लोग अपने संकीर्ण स्वार्थों के कारण अधर्म को ही धर्म के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। भोले एवं अज्ञानी प्रकृति के लोगों के समक्ष जब अधर्म को धर्म का जामा पहनाकर प्रस्तुत किया जाता है, तो वे उस अधर्म को ही धर्म समझ लेते हैं।

वस्तुतः धर्म इतना सशक्त और महान् है कि मनुष्य की प्रत्येक समस्या का समाधान प्रस्तुत कर सके। उसके स्वस्थ स्वरूप को जन-सामान्य के समक्ष रखा जा सके, सिद्धांतों को समझाया जा सके तो वह जनसामान्य का सर्वांगीण विकास करने में पूर्णतया समर्थ है।

आवश्यकता धर्म को अनुपयोगी या अमान्य ठहराने की नहीं, उसके साथ जुड गई अन्ध परम्पराओं और विकृतियों को दूर करने की है। यदि धर्म-धारणा को व्यावहारिक जीवन में समाविष्ट करके उत्कृष्ट गतिविधियाँ अपनाने वाले सच्चे धार्मिक व्यक्ति अपना उदाहरण प्रस्तुत कर सकें तो जनसाधारण को यह विश्वास करने में तनिक भी कठिनाई न होगी कि धार्मिकता, प्रतिगामिता नहीं, वरन् सच्चे अर्थों में प्रगतिशीलता है। ऐसी प्रगतिशीलता, जिस पर व्यक्ति और समाज का कल्याण सुनिश्चित रूप से आधारित है। साधना, स्वाध्याय, सत्संग आदि प्रवृत्तियाँ इसी शुद्ध धर्म धारणा को समझना और अपनाना होता है।

अधर्म का प्रतिरोध न करना भी पाप है

यह सच है कि संसार में अवांछनीयता कम और उत्कृष्टता अधिक है, तभी तो यह संसार अभी तक जीवित है। आग दुनिया में बहुत है पर पानी से अधिक नहीं। इतने पर भी हम देखते हैं कि अनाचार घटता नहीं, बढ़ता ही जाता है। इसके रोकथाम के लिए सरकारी प्रयत्न बहुत हुए पर उनकी पकड़ में दुष्टता की पूँछ ही आती है। आश्चर्य इस बात का है कि सज्जनता का बहुमत होते हुए भी असुरता की शक्ति क्यों अजेय बनती जा रही है? देवत्व उसके आगे पराजित होता, हारता और झक मारता क्यों दिखाई देता है?

कारण यह है कि जनमानस में से उस रोष-आक्रोश का, शौर्य-साहस का अस्तित्व मिटा नहीं, तो घटा जरूर है। इस कसौटी पर औसत आदमी डरपोक, कायर, दब्बू, संकोची, पलायनवादी और कुछ वैसा ही बन जाता है, जैसा कि गीता का विषादग्रस्त अर्जुन था। समय की माँग है कि हम भी युग की पुकार को सुनें, किंकर्त्तव्यमूढता और उदासीनता छोड़े तथा धर्म की रक्षा के लिए कदम बढ़ायें।

धर्म के प्रति जिसे जितना प्रेम हो, वह अधर्म के प्रति उतना ही प्रतिरोध रखे। स्वयं अनाचार से बचे और दूसरों को बचाये। अनीति को देखते हुए भी चुप बैठे रहना, उपेक्षा करना, आँखों पर परदा डाल लेना जीवित-मृतक का चिह्न है। जो उसका समर्थन करते हैं, वे प्रकारांतर से स्वयं ही दुष्कर्मकर्त्ता हैं। मूक रहकर दुष्कर्म होते देखते रहना भी अधर्म को बढ़ावा देना है, जो पाप है।

समय की माँग है कि हम यह न सोचें कि जब अपने पर विपत्ति आयेगी, तब देखेंगे। आग अपने छप्पर में लगी हो या कहीं और, उसे बुझाने को आत्मरक्षा का अप्रिय मोर्चा मानकर तुरंत विनाश से लड़ा जाय।

धर्म की स्थापना और अधर्म को मिटाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति का योगदान होना ही चाहिए। यदि सीधे टकराने की स्थिति न हो तो असहयोग और विरोध की दृष्टि से जितना कुछ बन पड़े, अवश्य करना चाहिए।

यज्ञ में प्रसन्न हुए देवता मनुष्यों पर कल्याण की वर्षा करते हैं। - पद्मपुराण सृ.खं. 3/132

देव संस्कृति की एक अनमोल धरोहर : कुम्भ महापर्व

आवश्यकता है वास्तविक महत्त्व समझने और लाभ उठाने की

कथा कुम्भ की

कुम्भ भारतीय संस्कृति का महापर्व है। इस पर्व पर स्नान, दान, ज्ञान मंथन के साथ ही अमृत प्राप्ति की बात कही जाती है। पुराणों में कथा है कि कश्यप ऋषि का विवाह दक्ष प्रजापति की पुत्रियों दिति और अदिति के साथ हुआ था। अदिति से देवों की उत्पत्ति हुई और दिति से दैत्य पैदा हुए। एक बार देवताओं और दैत्यों ने समुद्र में छिपी विभूतियों को प्राप्त करने के लिए समुद्र-मंथन किया। इससे 14 रत्न प्राप्त हुए, जिनमें से एक अमृत कलश भी था। देवता और दैत्य दोनों ही चाहते थे कि अमृत उन्हें मिले, वे उसे पीकर अमर हो जायें।

अमृत पाने के लिए दोनों के बीच युद्ध छिड़ गया। स्थिति को बिगड़ता देख देवराज इंद्र ने अपने पुत्र जयंत को संकेत किया। जयंत अमृत कलश लेकर भाग चला और दैत्य उसका पीछा करते रहे। अमृत कलश को सुरक्षित रखने में बृहस्पति, सूर्य और चंद्रमा ने बड़ी सहायता की। बृहस्पति ने दैत्यों के हाथों में जाने से कुम्भ को बचाया, सूर्य ने उसे फूटने से और चंद्रमा ने अमृत को छलकने से बचाया। इसके बावजूद संग्राम की उथल-पुथल में चार बूँदें छलक गयीं। ये हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नाशिक में गिरीं। इन्हीं चार नगरों में प्रत्येक 12 वर्ष में कुम्भ मेले आयोजित होते हैं।

कुम्भ मेलों में लाखों लोग अमृत प्राप्ति की कामना से इनमें भाग लेते हैं। अग्नि पुराण में लिखा है कि कुम्भ प्रतिदिन स्नान करना करोड़ों गायें दान करने के बराबर होता है। इनमें स्नान, दान, ज्ञान मंथन, मुण्डन आदि का विशेष महत्त्व बताया गया है।

विचारणीय प्रश्न यही है कि वह अमृत कौन सा है, जो कुम्भ में प्राप्त होता है या हो सकता है।

ऋषियों की महान परम्परा

ईश्वर और धर्म के प्रति आस्था एक महान विभूति है। यह आस्था व्यक्ति को सद्गुणी, संस्कारवान बनाती है, व्यक्ति की अंतर्निहित उन विशेषताओं को उभारती है, जिनके कारण मनुष्य को सृष्टि का मुकुटमणि, ईश्वर का राजकुमार बनने का अवसर मिला है। मानवीय आस्था ही देव संस्कृति की जननी है, मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण करने वाली दिव्य सम्पदा है।

देव संस्कृति के जनक अपना जीवन लोकमंगल के लिए समर्पित करने वाले आत्मज्ञानी, तपस्वी ऋषि-मुनि रहे हैं। वे ही सनातन काल से मानवीय आस्था का पोषण करते रहे हैं। समाज में मंदिर, आश्रम, आरण्यकों की स्थापना, व्रत-उपवास, पर्व-त्यौहार, सत्संग-मेले जैसे क्रम इसी मानवीय आस्था के पोषण और परिष्कार के माध्यम हैं।

पुण्य और पाप

वस्तुतः जिन्हें हम धर्म-कर्म मानते हैं वे संस्कार, सद्गुण, सद्विचार एवं सद्भावों को जीवन में आत्मसात करने का अभ्यास हैं। हमारे ऋषियों-मनीषियों ने इनके माध्यम से जो विचार और व्यवहार व्यक्ति की प्रगति और समाज की उन्नति के लिए आवश्यक है, उसे जीवन के अभ्यास में लाने की मनोवैज्ञानिक ढंग से व्यवस्था बनाई। नर-नारी, बच्चे से लेकर बूढ़े और समाज के हर शिक्षित-अशिक्षित व्यक्ति की इन कार्यों के प्रति आस्था बनी रहे, इसके लिए इन्हें 'पुण्य कर्म' कहा गया। जो कर्म मानवीय प्रगति और सामाजिक उन्नति में बाधक हैं उन्हें 'पाप कर्म' मानकर उनसे दूर रहने की प्रेरणा दी गई।

गौपालन, तुलसी स्थापना, गंगा स्नान, तीर्थयात्रा, एकादशी व्रत, ब्रह्मचर्य आदि पुण्यदायी धर्मकृत्य हैं। यह इसलिए हैं, क्योंकि गाय हमारी सामाजिक प्रगति का आधार रही है। उससे दूध, गोबर, बछड़े मिलते हैं। तुलसी अनेक रोगों को दूर करने वाली अमोघ औषधि है। गंगा के जल में ऐसे रासायनिक तत्त्व पाये जाते हैं जो स्वास्थ्य सुधार के लिए उपयोगी हैं। तीर्थयात्रा में देशाटन केअनुभव, सत्पुरुषों का सत्संग और वायु परिवर्तन होता है। एकादशी व्रत रखने से पंद्रह दिन का कब्ज पच जाता है। ब्रह्मचर्य से शरीर बलवान होता है। इन प्रत्यक्ष लाभों को देखते हुए ही इन्हें पुण्यदायी धर्मकार्य कहकर सामाजिक परम्पराओं में गूँथ दिया गया है।

बात महाकुम्भ की

इन्हीं पुण्यदायी परम्पराओं में एक है 'कुम्भ में स्नान'। हमारे पुराण आदि आर्ष ग्रंथों में अनेक तथ्यों को अलंकारिक ढंग से भी प्रस्तुत किया गया है, ताकि जनमानस की उन पर आस्था प्रगाढ़ हो, उन्हें सहजता से समझा और याद रखा जा सके। आइये! कुम्भ की पौराणिक कथा को इस तरह से समझने का प्रयास करते हैं।

समुद्र मंथन : ईश्वर ने मनुष्यमात्र को एक समान बनाया है, लेकिन उनमें स्वार्थी और परोपकारी लोगों का अस्तित्व सदा से रहा है। जो परोपकारी हैं, समाज का भला चाहते हैं वे देवता और जो दूसरों के लिए पीड़ादायक होते हैं, मानवीय गरिमा को छोड़कर दूसरों के हिस्से का धन-साधन बटोरते रहते हैं, वे दैत्य प्रकृति के होते हैं।

समुद्र मंथन वस्तुतः विचारों का ही मंथन है, जिससे बड़े उपयोगी आविष्कार होते रहते हैं। अच्छे-बुरे हर तरह के व्यक्ति इनका लाभ लेकर अपनी सामर्थ्य बढ़ाना चाहते हैं। उदाहरण के लिए देखें-

परमाणु ऊर्जा की खोज मानवीय सुख-समृद्धि के लिए एक अच्छी खोज है। देव प्रकृति के लोग उसके सदुपयोग से समाज की ऊर्जा सम्बन्धी आवश्यकताएँ पूरी कर सकते हैं। लेकिन बुरी नीयत वालों ने, जिन्हें अलंकारिक रूप से दैत्य भी कहा जा सकता है, संसार के विनाश का माध्यम बनाने की ठान ली है। इसीलिए कुम्भ की पौराणिक कथा की तरह इस अमृत को दैत्यों के हाथों में पड़ने से बचाये रखने के लिए छिपाये रखना पड़ता है।

कुम्भ का अमृत है-सद्ज्ञान

पौराणिक काल की तरह आज भी देवी-देवताओं का चित्रण सुन्दर शृंगारित, सौम्य मुस्कान युक्त होता है और दैत्यों को सींग एवं बड़े-बड़े दाँतों वाला दिखाया जाता है, लेकिन थे तो दोनों एक जैसे ही मानव। दोनों ही शक्तिशाली थे, तपस्वी थे, दिव्य विभूतियों से सम्पन्न थे। बस अन्तर था तो उनके चिंतन में। देवता अपनी विभूतियों को बाँटकर संसार को खुशहाल बनाने में सहयोगी होते थे और दैत्य दूसरों के अधिकारों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर अपना आतंक फैलाते रहते थे।

कुम्भ की पौराणिक कथा में अमृत की चार बूँदें हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नाशिक में गिरने और वहाँ कुम्भ मेले लगने की बात कही गई है। वस्तुतः सनातन संस्कृति के परम तपस्वी ऋषियों-धर्मगुरुओं ने इन चार स्थानों पर हर बारह वर्ष में एक बार एकत्रित होकर जनमानस की आस्थाओं का पोषण करने का क्रम बना रखा था। यह परम्परा आज भी चली आ रही है। समाज की विकृतियों को दूर करने, समस्याओं का निराकरण करने, व्यक्तिगत उन्नति और सामाजिक प्रगति के सूत्र प्रदान करने का नैतिक दायित्व इन्हीं महात्माओं पर होता था। क्षेत्रीय संत, सुधारक, धर्मगुरुओं के साथ आमजनमानस भी उनके इस ज्ञानामृत का लाभ लेने इन मेलों में पहुँचता था।

जिस अमृत को पीकर अमर हो जाने की कल्पना आम जनमानस में है, वैसा अमृत आज तक तो किसी को मिला नहीं है। वस्तुतः ज्ञान ही वह अमृत है, जिसे पाकर और जीवन में अपनाकर बुद्ध, महावीर, नानक, गोविंद, ईसा, मुहम्मद पैगंबर से लेकर गाँधी-विनोबा जैसे महापुरुष इतिहास में अजर-अमर हो गये।

सर्वोत्तम है सद्ज्ञान का दान

युग साहित्य
स्वयं पढ़ें, सबको पढ़ायें

कुम्भ मेलों में ज्ञानदान की जो प्राचीन पुण्य परम्परा थी, उसे पुष्ट करने के लिए एक सशक्त विचार क्रांति अभियान चलाने की आवश्यकता है। यह कार्य वशिष्ट, विश्वामित्र, भगीरथ जैसे लोकमंगल के लिए जीवन अर्पण करने वाले दिव्य ऋषियों की सोच को जन-जन तक, घर-घर तक पहुँचाकर ही संभव है।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने इस युग में उसी ऋषि परम्परा का निर्वाह करते हुए प्रचण्ड तप किया और वर्तमान युग की समस्त समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया। उनकी प्रेरणा ने लाखों लोगों की समस्याओं का समाधान कर उन्हें नया जीवन दिया है। उनकी लिखी हजारों पुस्तकों में यह ज्ञानामृत विद्यमान है। अपनी आवश्यकता एवं जिज्ञासा के अनुसार श्रद्धालु इसे स्वयं पढ़ें, औरों को पढ़ायें, जन-जन तक पहुँचाने में सहयोगी बनें ताकि कुम्भ जैसे महान् धार्मिक अनुष्ठान में भागीदारी का वास्तविक पुण्यलाभ प्राप्त हो सके, जीवन धन्य हो जाये।

सद्ज्ञान ही वह अमृत है जिसके पयपान से मनुष्यता का मोल समझ में आता है। ज्ञान से ही अंतर्निहित अकूत शक्तियों को जगाने और संभावनाओं को साकार करने का अवसर मिलता है। ज्ञान से व्यक्ति सादगीपूर्ण जीवन में भी स्वर्ग जैसे सुख और शांति की अनुभूति कर सकता है। सद्ज्ञान का अभाव है तो कुबेर का धन और स्वर्ग जैसे साधन पाकर भी वह सदा हताश, निराश, बेचैन और चिंताग्रस्त ही रहेगा।

कुम्भ और शान्तिकुञ्ज से जुड़ा एक रहस्यमय प्रसंग

बात सन् 1986 की है। परम पूज्य गुरुदेव पर चाकू से प्राणघाती हमला हो चुका था, जो चकत्कारिक ढंग से निष्फल हुआ। शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री महेन्द्र कुमार शर्मा उन दिनों परम पूज्य गुरुदेव की सुरक्षा-सेवा में रहते थे और निर्माण विभाग के प्रभारी भी थे। वे बताते हैं-

हमले के बाद पूज्य गुरुदेव की सुरक्षा कड़ी कर दी गई थी। हर समय उनकी सुरक्षा का दायित्व हमारा और एक पुलिसकर्मी भीम पर था। वे अपने कमरे में ही रहते थे और उनके कमरे पर सदैव हमारी नज़र रहती थी।

एक दिन पू. गुरुदेव ने कहा, "मैं सात दिनों के लिए हिमालय गया था। वहाँ मैंने सप्तऋषियों को हरिद्वार कुम्भ के समय शान्तिकुञ्ज आने के लिए सहमत कर लिया है। वे एक अंश से शान्तिकुञ्ज में ही रहकर अपनी योजनाएँ चलाएँगे।" उन्होंने यह बात अखण्ड ज्योति पत्रिका में भी प्रकाशित कर दी तो हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। हम लगातार उनका पहरा दे रहे थे, फिर वे हिमालय कैसे गए।

उत्सुकता और असमञ्जस की स्थिति में वस्तुस्थिति जानने हम माताजी के पास पहुँचे। माताजी बोलीं "बेटा! भगवान कृष्ण कारागार की सलाखों में कड़े पहरे में पैदा होने के बाद रातोंरात गोकुल पहुँच सकते हैं तो ये हिमालय क्यों नहीं जा सकते?" पूज्य गुरुदेव की महानता का बोध हुआ, हृदय सौभाग्य की अनुभूति से भावविभोर हो गया।

अप्रैल 1986 की बात है। गुरुदेव ने हमें बुलाया, कहा कि हिमालयवासी ऋषिगण सात दिन बाद शान्तिकुञ्ज आ रहे हैं। तुम उनके लिए सात मंदिर तैयार करो और जयपुर से जाकर उन सात ऋषियों की मूर्ति बनवा लाओ। दोनों ही कामों का सात दिनों में हो पाना कठिन था। हमने कहा-हमारे पास मिस्त्री नहीं है। यदि तुलसी होता तो शायद सात दिनों में बनाने का हम प्रयास भी करते, लेकिन वह तो पाली में है। गुरुदेव बोले-अच्छा तुम काम शुरू करो, हम तुलसी को बुलाने की व्यवस्था कर देंगे।

हम गुरुदेव से मिलकर नीचे उतरे ही थे कि सामने से तुलसी आता दिखाई दिया। हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं था, पूछा-कहाँ से आ रहे हो? वह बोला-पाली से। गुरुदेव की लीला को हम देखते ही रह गए, कुछ बोल नहीं सके।

एक भाई जयपुर गए। न मूर्ति का चित्र, न मूर्तिकार का पता। सात दिनों में मूर्ति बनवाना असंभव-सा ही लगता था। गाड़ी लेजाकर एक मूर्तिकार की दुकान के पास रोक दी। कई दुकानें देखीं पर काम नहीं बना। वापस लौटे तो जिस मूर्तिकार की दुकान के सामने गाड़ी खड़ी की थी, उसने बुलाकर पूछा-क्या ढूँढ़ रहे हो? हमने अपनी बात बताई। वह बोला सात ऋषियों की मूर्तियाँ हमने किसी और के लिए बनाकर रखी हैं। आप देख लीजिए, यदि पसंद आएँ तो ले जाइये। हम दूसरी बना लेंगे। भीतर जाकर देखा तो वैसी ही मूर्तियाँ थीं जो हमें चाहिए थीं। ऐसा लगा जैसे पूज्य गुरुदेव की सूक्ष्म चेतना ने सब व्यवस्था पहले से ही बना रखी थी। हम तो कर्त्तापन का बोध कर निरर्थक ही परेशान हो रहे थे।

असंभव-सा लगने वाला कार्य संभव हुआ। पू. गुरुदेव-वं. माताजी ने सप्तऋषियों की प्राण प्रतिष्ठा की। एक अंश से इन ऋषियों की जीवंत उपस्थिति शान्तिकुञ्ज में है, इस दृष्टि से उन्हें कोई स्पर्श न करने पाये इसका प्रबन्ध चारों ओर काँच की दीवार लगाकर किया गया है।

इस घटना ने हमें यह स्पष्ट बोध करा दिया था कि यह सारी योजना एक दैवी योजना है। इसमें साझेदारी का श्रेय-सौभाग्य जिन्हें भी प्राप्त हो रहा है, वे बड़े सौभाग्यशाली हैं।

धीर पुरुष को एक ही प्रकार की उन्नति में संतुष्ट नहीं रहना चाहिए। मनुष्य को जीवन में सभी दिशाओं में उन्नति करनी चाहिए। - गायत्री स्मृति

देव संस्कृति के उन्नायक-पुनरुद्धारक

युगऋषि वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

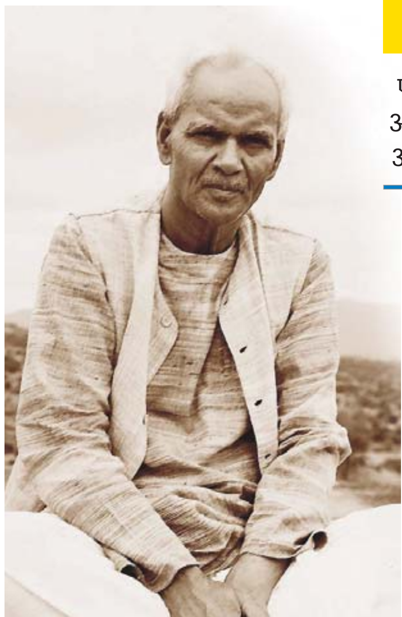

युगऋषि वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा विश्व मानवता को दिए गए अजस्र अनुदान

एक सच्चे ब्राह्मण और संत के रूप में अनुकरणीय जीवन	गायत्री और यज्ञ को जन-जन तक पहुँचाया	युग संजीवनी स्वरूप साहित्य सृजन : 3200 पुस्तकें लिखीं	करोड़ों देवात्माओं का विराट् संगठन, एक देव परिवार	धर्म-अध्यात्म की प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक अध्यात्मवाद के विस्तारक	'इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य' के उद्घोषक	ईश्वरीय योजना 'युग निर्माण योजना' के विस्तारक

आज से कई दशकों पहले से इस दुनिया में हा-हाकार मचा है। मानवता के सर्वनाश का खतरा मँडरा रहा है और निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। देश और दुनिया के तमाम वैज्ञानिक पर्यावरण प्रदूषण, प्राकृतिक आपदा, बढ़ती जनसंख्या, अणु आयुधों की होड़ जैसे अनेक विषयों का विश्लेषण करने पर आज भी यही बात बार-बार दोहरा रहे हैं कि धरती सर्वनाश के कगार पर जा पहुँची है। लेकिन प्रचण्ड तपस्वी युगऋषि वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने सन् 1986 में ही घोषणा कर दी थी कि परमात्मा अपनी बनाई इस दुनिया को नष्ट नहीं होने देगा। यह दुनिया बदलेगी, इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य लेकर आ रही है।

यह केवल युगऋषि की घोषणा ही नहीं है, सम्पूर्ण योजना है-युग निर्माण योजना। इसका आधार उनकी प्रचण्ड साधना और प्रखर विचार हैं, जिनके आधार पर वे आज की डरी-सहमी मानवता के समक्ष फिर एक बार 'यदा-यदा हि धर्मस्य .....' वाला श्रीभगवान का संकल्प दोहरा रहे हैं। इस युग में भगवान राम और कृष्ण जैसा देवतुल्य जीवन जीकर लाखों-करोड़ों लोगों में नवजीवन का संचार करने वाले परम पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व और कृतित्व का वास्तविक आंकलन तो आने वाला समय ही करेगा, लेकिन यह सुनिश्चित रूप से कहा जा सकता है कि विश्व मानवता को दिये गये उनके अनुदान ऋषि भगीरथ, वशिष्ठ और विश्वामित्र से कम नहीं हैं।

सच्चे ब्राह्मण-संत

जीवन के क्षण-क्षण व अपनी धन-सम्पत्ति के कण-कण का पूरी सादगी और संयम के साथ सदुपयोग करते हुए सच्चे ब्राह्मण का आदर्श प्रस्तुत करने वाले प.पू. गुरुदेव का जीवन मानवमात्र के लिए अनुकरणीय है। उनकी सादगी, सज्जनता, करुणा, प्रेम से प्रभावित हुए बिना कोई नहीं रहा। उनका जीवन पूरी तरह लोकमंगल के लिए समर्पित रहा। वे कहते थे, ''इन दिनों जो कुछ चमत्कार नज़र आता है वह मेरे ब्राह्मण जीवन का ही प्रतिफल है। साधना से मिली सिद्धियों का प्रयोग तो युग परिवर्तन जैसे बड़े कार्यों के लिए किया जाना है।

गायत्री और यज्ञ

गायत्री प्राणदायिनी है। दुर्भाग्य से देश की गुलामी के अंधकार युग में उसे जपने का अधिकार वर्ग विशेष तक ही सीमित कर दिया गया था। परम पूज्य गुरुदेव के भागीरथी तप का ही प्रभाव है कि अब गायत्री घर-घर, जन-जन तक पहुँच रही है। कदाचित आचार्य जी न आते तो गायत्री विलुप्त हो जाती।

आज गायत्री उपासना और यज्ञ से देश-विदेश के करोड़ों लोग अनुप्राणित हो रहे हैं। उनके जीवन में पवित्रता, प्रखरता का संचार हो रहा है। वे युगऋषि के समाज के नवनिर्माण के संकल्प में साझेदारी करते हुए लोकमंगल के पथ पर कदम बढ़ा चुके या इसके लिए उत्साहित हैं।

साहित्य संजीवनी

आचार्य जी ने जीवन के उत्थान के लिए आवश्यक और समाज की हर समस्या पर अपने साहित्य से समाज का पथ प्रशस्त किया है। उन्होंने 3200 से अधिक पुस्तकें लिखीं, जो युगों-युगों तक मानवता का पथ प्रदर्शन करती रहेंगी। वे कहते थे, ''मैं लेखक नहीं हूँ। मेरे विचार क्रांति के बीज हैं। इन्हें जन-जन तक, घर-घर तक पहुँचा दीजिए। ये विचार अगले दिनों धमाका करेंगे।'' उन्होंने कहा, ''मैं युग की समस्याओं का चिंतन करता हूँ और सूक्ष्म जगत से जो समाधान मिलते हैं, उन्हीं को लिपिबद्ध कर देता हूँ।

विराट् देव परिवार

गायत्री परिवार उन लाखों-करोड़ों देवात्माओं का विराट संगठन है, जिन्हें परम पूज्य गुरुदेव एवं उनकी सहधर्मिणी परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा, जिन्हें सभी श्रद्धापूर्वक वंदनीया माता जी ही कहते हैं, ने अपने प्रेम और संरक्षण से एक सूत्र में जोड़ा है। यह वह परिवार है जिसमें अपनी आराध्य सत्ता के प्रति अटूट श्रद्धा है। गायत्री परिवार को सेठ-साहूकारों के बड़े अनुदानों ने नहीं, इन्हीं रींछ-वानरों, ग्वाल-बालों के छोटे-छोटे अनुदानों ने सींचा है, जो यज्ञभाव के साथ अपने समय, श्रम, साधन, प्रतिभा को लोकमंगल के लिए समर्पित कर रहे हैं।

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद

भारत की सनातन परम्पराओं में घुस पड़े अंधविश्वास और मूढ़मान्यताओं-कुरीतियों के प्रभाव से दुनिया के लोग धर्म को अफीम की गोली कहने लगे थे। परम पूज्य गुरुदेव ने धर्म के शाश्वत सूत्रों को आजीवन अपने जीवन की प्रयोगशाला में सिद्ध किया और धर्म के उस शुद्ध स्वरूप का प्रतिपादन किया जो सर्वमान्य है, विज्ञान सम्मत है, समाज के लिए उपयोगी है।

गायत्री परिवार का लक्ष्य धर्मतंत्र से अंधविश्वास, कुरीतियाँ, मूढ़मान्यताओं को समाप्त कर अनास्था संकट को दूर करना है। यह कार्य गायत्री और यज्ञ से ही संभव हो सकता है।

> हम लेखक नहीं हैं, हमारे विचार क्रांति के बीज हैं। हमारे लिखे शब्दों से आग निकलती है। हमारे विचारों की आग को, भावनाओं की आग को, संवेदनाओं की आग को आप घर-घर पहुँचा दीजिए। ये विचार अगले दिनों धमाका करेंगे। - **युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य**

गुरुदेव के अद्वितीय पुरुषार्थ की कुछ और बातें

- 24-24 लाख के चौबीस गायत्री महापुरश्चरण 24 वर्ष में किए। इन 24 वर्षों में मात्र गाय के दूध की छाछ और गाय को जौ खिलाने के बाद उसके गोबर से निकले जौ से बनी एक रोटी का सेवन किया। उल्लेखनीय है कि वे अपनी उपासना सूर्योदय से पूर्व ही समाप्त कर लेते और दिनभर लोकमंगल के कामों में समर्पित रहते थे।
- आगरा जिले में 'श्रीराम मत्त' के नाम से विख्यात अग्रणी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी। छः बार 6-6 माह का कठोर कारावास भी हुआ।
- हिमालयवासी 700 वर्षीय सूक्ष्म शरीर धारी गुरुसत्ता स्वामी सर्वेश्वरानंद जी से साक्षात्कार हुआ। उन्होंने पूर्व जन्मों (कबीर दास, समर्थ गुरु रामदास एवं स्वामी रामकृष्ण परमहंस) का बोध काराया।
- चार वेद, 18 पुराण, 108 उपनिषद्, सभी स्मृति, दर्शन आदि आर्ष ग्रंथों का भाष्य किया। उन्होंने 19वें प्रज्ञोपनिषद् (6 खण्ड में) की रचना की जो वर्तमान युग की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है।

परम पूज्य गुरुदेव का संदेश है

अखण्ड ज्योति (मासिक पत्रिका)

परम पूज्य गुरुदेव की युग निर्माण योजना समाज में आत्मशक्तियों के प्रति विश्वास जगाने, आध्यात्मिक जीवन के प्रति आस्था बढ़ाने, सृजनात्मक आन्दोलनों को गति देते हुए सतयुगी समाज का निर्माण करने का एक विराट अभियान है। वे अपने लिखे विपुल साहित्य के अलावा सन् 1940 से ही मासिक पत्रिका 'अखण्ड ज्योति' के माध्यम से अपने अनुयायियों और अध्यात्म क्षेत्र में रुचि रखने वाले परिजनों का पथ प्रदर्शन-उत्साहवर्धन करते रहे हैं। आज भी वह क्रम अनवरत चल रहा है, लगभग 12 लाख लोग इसका लाभ ले रहे हैं।

अखण्ड ज्योति पत्रिका वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का प्रतिपादन करती है। यह अंग्रेजी, मराठी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, असमिया भाषाओं में भी प्रकाशित होती है। गुजराती में यह 'युगशक्ति गायत्री' के नाम से प्रकाशित होती है।

युग निर्माण योजना (मासिक)

अखण्ड ज्योति की तरह ही जनमानस में आध्यात्मिक जीवन की प्रेरणाओं का संचार करने तथा समाज में स्वस्थ परंपराओं का विस्तार करने के लिए समर्पित है परम पूज्य गुरुदेव की एक और पाती मासिक पत्रिका 'युग निर्माण योजना'। इसमें अध्यात्म के व्यावहारिक पक्ष को प्रमुखता से उकेरा जाता है। यह केवल हिन्दी भाषा में ही प्रकाशित होती है।

प्रज्ञा अभियान (पाक्षिक)

प्रज्ञा अभियान अखिल विश्व गायत्री परिवार के मुख्यालय शांतिकुंज से प्रकाशित समाचार पत्र है। इसमें युगऋषि के विचार, सामयिक सक्रियता के लिए मार्गदर्शन तथा देश-विदेश में गायत्री परिवार की गतिविधियों के समाचार होते हैं। **जिन्हें गायत्री परिवार से जुड़ना हो, उन्हें प्रज्ञा अभियान अवश्य पढ़ना चाहिए।** यह हिंदी के अलावा गुजराती और बंगला भाषा में भी प्रकाशित होता है। नियमित अंकों को देखने के लिए संपर्क करें - मो : **9258369413**

संपर्क सूत्र : अखण्ड ज्योति (हिंदी, अंग्रेजी) के लिए :
अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा (उत्तर प्रदेश) फोन : 9927086291

युग निर्माण योजना (हिन्दी) तथा युगशक्ति गायत्री (गुजराती) के लिए संपर्क करें :- गायत्री तपोभूमि, मथुरा (उत्तर प्रदेश)
फोन : 0565-2530115, 9927086287

अखण्ड ज्योति (मराठी, ओडिया, तमिल, तेलुगु, कन्नड, असमिया) तथा प्रज्ञा अभियान (हिन्दी, गुजराती, बंगला) के लिए : गायत्रीतीर्थ-शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखंड) फोन : 9258369725

स्नेहसलिला शक्तिस्वरूपा परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

जैसे शिव और शक्ति अभिन्न हैं, सीताराम, राधेश्याम अभिन्न हैं, वैसे ही स्नेह सलिला शक्ति स्वरूपा माता भगवती देवी शर्मा युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव की अभिन्न सत्ता ही थी। लौकिक रिश्ते में तो वे पूज्य गुरुदेव की सहधर्मिणी थीं, लेकिन गायत्री परिवार के करोड़ों शिष्य-साधकों की तरह स्वयं परम पूज्य गुरुदेव भी उन्हें माताजी ही कहा करते थे। स्वयं उन्हीं के शब्दों में- ''*माताजी ने प्रायः आधी शताब्दी हमारी ऐसी ही सेवा की, जैसे काया-छाया का अभिन्न सम्बन्ध कहा जाता है। उनकी काया में है तो हाड़-मांस ही, पर इसका कोई कण ऐसा नहीं है, जिसमें श्रद्धा कूट-कूट कर न भरी हो। ऐसा कोई नहीं जो उनके सम्पर्क में आया और निष्ठावान न हुआ हो।*''

परम वं. माता भगवती देवी शर्मा

प. वन्दनीया माताजी पूज्य गुरुदेव की ही अभिन्न सत्ता थीं। जिन्हें उनका कुछ क्षण का ही सान्निध्य क्यों न मिला हो, वह माताजी के प्यार से भावविभोर हो गया।

वंदनीया माताजी ने आजीवन प्यार लुटाया, करोड़ों लोगों का विराट देव परिवार बनाया। उन्होंने समाज में उपेक्षित नारी में नया आत्मविश्वास जगाया, उन्हें सम्मान दिलाया। इसके अलावा जब-जब भी आवश्यकता पड़ी, सम्पूर्ण मिशन के सूत्र संचालन से लेकर मासिक अखण्ड ज्योति पत्रिका के संपादन तक का कार्य बड़ी कुशलता से सँभाला।

परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण के बाद उन्होंने गायत्री परिवार को जो गति प्रदान की, उसमें उनके विराट शक्ति स्वरूपा स्वरूप की झाँकी स्पष्ट दिखाई देती थी। उन्हीं के संरक्षण-मार्गदर्शन में अनेक प्रतिकूलताओं के बावजूद हरिद्वार में कुम्भ स्तर का विराट आयोजन हुआ। उन्हीं के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन और सूक्ष्म संरक्षण में देश-विदेशों में अश्वमेधों की शृंखला चली, जिनमें एक-एक आयोजन में कई-कई लाख लोगों ने भाग लिया। वे भारत के 16 और विदेशों के 4 अश्वमेध महायज्ञों में स्वयं उपस्थित रहीं।

परम वंदनीया माताजी के शक्तिस्वरूपा रूप के दर्शन : अश्वमेध यज्ञों में उमड़ा जन सैलाब

देव संस्कृति के निर्माता, यज्ञ पिता-गायत्री माता

सद्विवेक और परमार्थ परायण जीवन ही है थकी-हारी मानवता की समस्याओं का समाधान

'गायेन त्रायते इति गायत्री'
अर्थात्-जिसके गायन से प्राणों का त्राण हो, वह गायत्री है।

गायत्री वेदमाता है, देवमाता है, विश्वमाता है। अर्थात् ब्रह्माण्ड में विद्यमान समस्त ज्ञान का, देवत्व का और इस सारी सृष्टि का उद्भव गायत्री से ही हुआ है।

गायत्री सर्वकामधुक् (सभी श्रेष्ठ कामनाओं को पूरा करने वाली) है।

दुनिया का सबसे छोटा धर्मशास्त्र
गायत्री की महिमा से समस्त आर्षग्रंथ भरे पड़े हैं। वस्तुतः दुनिया का सारा ज्ञान गायत्री के चौबीस अक्षरों का ही विस्तार है। इसीलिए इसे दुनिया का सबसे छोटा धर्मग्रंथ कहा जाता है।

गायत्री गुरुमंत्र है, अर्थात् गायत्री की उपासना करने वाले साधक के अंतःकरण में ज्ञान का प्रकाश बढ़ता ही जाता है। उस प्रकाश में भावी प्रगति के मार्ग खुलते जाते हैं, साधक की समस्याओं का समाधान स्वतः ही सूझने लगता है और तद्नुरूप सहायता और मार्गदर्शन प्राप्त होने के योग भी स्वतः ही बनते देखे जाते हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता में स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है-
गायत्री छन्दसामहम्। (अ.10.35)
अर्थात्-छन्दों में मैं गायत्री छन्द हूँ।

संलग्न स्तंभ (बाँयी ओर) में गायत्री की गौरव-गरिमा सिद्ध करने वाले कुछ उदाहरण दिए गये हैं। ऐसी उक्तियों से आर्षग्रंथ भरे पड़े हैं। यहाँ छोटे से आलेख में गायत्री का तत्त्वदर्शन समझाना कठिन है, केवल यह महत्ता बताने का प्रयास किया जा रहा है कि जीवन के उत्कर्ष के लिए गायत्री उपासना कितनी महत्त्वपूर्ण है।

जब भारत में सभी गायत्री उपासना करते थे, तब भारत जगद्गुरु था, सारे विश्व का मार्गदर्शक था। जब से इसे प्रतिबंधित कर दिया गया, इस राष्ट्र के पतन-पराभव का क्रम आरंभ हो गया। अब जब हमें अपनी खोई हुई सामर्थ्य को पुनः अर्जित करना है तो उसका आधार गायत्री ही होगी।

गायत्री महामंत्र की चमत्कारिक सामर्थ्य

गायत्री उपासना से आत्मबल बढ़ता है और सद्बुद्धि का विकास होता है। गायत्री मंत्र दुनिया का सबसे प्रभावशाली मंत्र है। पिछली शताब्दी के आठवें दशक में सुप्रसिद्ध साप्ताहिक पत्रिका 'ब्लिट्ज' के सम्पादक श्री आर.के. करंजिया ने परमाणु अस्त्रों की होड़ से चिंतित वैज्ञानिक आर्थर कोसलर से पूछा था कि भारत अणु आयुधों का सामना कैसे कर सकता है? इसके जवाब में ऑर्थर कोसलर ने कहा था, ''आपके पास गायत्री मंत्र है। यदि सभी भारतवासी एक साथ गायत्री मंत्र का पाठ करें तो उससे इतनी शक्ति उत्पन्न होगी कि हमलावारों के हौसले पस्त हो जायेंगे।''

आज विज्ञान भी गायत्री महामंत्र की अकूत सामर्थ्य को स्वीकार कर रहा है, जबकि उसका वास्तविक प्रभाव तो यंत्रों की पकड़ से अनेकों गुना अधिक है। इन दिनों देशभर में सामूहिक गायत्री साधना का विराट प्रयोग हो रहा है, जिसका प्रभाव विश्व पटल पर दिखाई भी दे रहा है।

वेदमाता गायत्री

गायत्री महामंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

उस प्राण स्वरूप, दुःख नाशक, सुख स्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देव स्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे।

गायत्री का प्रभाव

गायत्री मंत्र परमात्मा से की गई सद्बुद्धि की प्रार्थना है। इसका उच्चारण शरीर के सभी ऊर्जा केन्द्रों-चक्र-उपत्यिकाओं को स्पंदित कर उन्हें जाग्रत् करता है, जिससे आत्मशक्ति का जागरण होता है।

सरल भाषा में समझना हो तो इसे जनरेटर की तरह समझा जा सकता है। जनरेटर चालू होते ही प्रकाश और ऊर्जा का संचार होने लगता है, उसी प्रकार गायत्री मंत्र के जप से शरीर में आत्मबल की वृद्धि होती है। आत्मबल बढ़ता है तो मन और विचारों में पवित्रता-प्रखरता बढ़ती है। तब व्यक्ति में लोभ, मोह, भय, हताशा, निराशा की बेड़ियों को तोड़कर आदर्शों को अपनाने और अवांछनीयताओं को ठुकराने का साहस बढ़ता जाता है।

गायत्री मंत्र जप का अपना ही प्रभाव है, लेकिन जब उसे उसके भाव के साथ जपा जाता है तो उसकी सामर्थ्य कई गुना अधिक हो जाती है।

सद्बुद्धि दात्री गायत्री

आज संसार में अज्ञान, अभाव, अशक्ति है तो संसाधनों की कमी से नहीं, मानवीय दुबुद्धि के कारण ही है। उसी के कारण धन व्यसन में, शक्ति उत्पीड़न में, बुद्धि कुचक्र रचने में लगी है। गायत्री के उपासक में मंत्र में निहित भाव के अनुरूप सद्बुद्धि का विकास होता है। परिणाम स्वरूप वह सन्मार्ग पर चल पड़ता है। स्वयं शांति और आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है और अपने समाज को भी सुख-शांति की ओर ले जाता है।

आज समाज को इसी की जरूरत है। गायत्री में ही विश्व की सारी समस्याओं का समाधान निहित है। गायत्री देव संस्कृति की जननी है, माता है, जो अपने हर बालक को प्यार और दुलार के साथ उज्ज्वल भविष्य के पथ पर अग्रसर करती है।

मानवमात्र के लिए उपास्य है गायत्री

गायत्री किसी धर्म-सम्प्रदाय की नहीं है, यह मानवमात्र के लिए उपास्य है। यदि हर धर्म-वर्ग के लोग गायत्री उपासना करने लगें तो धर्म-वर्ग के नाम पर दुनिया में चल रहे लड़ाई-झगड़े ही समाप्त हो जायें, क्योंकि हर धर्म मानवता का ही पाठ तो पढ़ाता है। आज का दुर्बुद्धिग्रस्त इंसान उसे ठीक से समझ नहीं पा रहा। गायत्री उपासना का सामूहिक प्रभाव जन-जन में सद्बुद्धि जगाकर विश्व में शांति और प्रगति का पथ प्रशस्त करेगा।

फिर भी यदि गायत्री मंत्र जपने में संकोच होता है तो अपने इष्ट मंत्र या नाम जप के साथ गायत्री मंत्र का भाव जोड़कर भी वही लाभ प्राप्त कर सकता है।

यज्ञ
एक संस्कृति, जीवन जीने की कला

इस ब्रह्माण्ड का जन्म गायत्री महाशक्ति की स्फ्फुरणा से हुआ, तो वहीं इसका पालन एक संस्कृति-देव संस्कृति के अनुशासन से हो रहा है। इस स्वचालित अनुशासन का नाम है यज्ञ। इसीलिए कहा जाता है 'देव संस्कृति के निर्माता, यज्ञ पिता-गायत्री माता'।

यज्ञ जीवन जीने की कला है। यज्ञ का अर्थ है परमार्थपरायणता, सर्वे भवंतु सुखिनः की भावना और कामना के साथ अपने भाव, विचार और कर्मों को समष्टिगत हित के लिए समर्पित कर देना। चाहे व्यक्ति हो, समाज हो या प्रकृति; जहाँ यज्ञभाव है, वहीं सुख-शांति है, प्रेम है, आनन्द है।

जब सारी प्रकृति यज्ञ कर रही है तो इंसान ही क्यों पीछे है? वह तो सर्वशक्तिमान है। उसके पास भगवान का दिया सर्वोत्तम अनुदान है। यदि वह ईश्वरीय इच्छा और प्रकृति के अनुशासन में सादगी के साथ श्रमशील, विवेकयुक्त जीवन जीना सीख ले तो कमी कहीं नहीं रहेगी। यही यज्ञभाव है।

हमारे समाज में जिस यज्ञ (हवन) का प्रचलन है, वह इसी यज्ञभाव को सीखने, समझने और अपनाने की साधना है। यज्ञीय जीवन ही सार्थक है। यज्ञ से ही व्यक्ति महान बनता है और समाज सुखी रह सकता है।

सारी सृष्टि यज्ञ कर रही है। सूर्य दुनिया के लिए निरंतर तपता है। सागर अपना जल बादलों को देते हैं। वे बादल यज्ञभाव के साथ उसे धरती पर बरसाकर धरती की तपन को शीतलता प्रदान करते हैं, धरती माता को सींचते हैं। हिमालय निरंतर पिघल-पिघलकर धरती की प्यास बुझाने के लिए जलराशि नदियों को देता है। नदियाँ अहर्निश प्रवाहित होती रहती हैं। धरती माता अन्न उपजाती रहती है।

जहाँ यज्ञ होता है, अर्थात् स्वयं संग्रह न कर अपने संसाधनों को लोकमंगल के लिए समर्पित कर देने की परम्परा चलती रहती है, वहाँ कभी कमी नहीं पड़ती। सागर कभी सूखता नहीं, बादल बनते ही रहते हैं। नदियों को अथाह जलराशि अनवरत मिलती रहती है। धरती माता हर बार नई फसल देती है। पेड़ फल देते हैं तो फिर नये फल आ जाते हैं।

दूसरी ओर जो अपने ही पास रखते हैं, वे घाटे में रहते हैं। तालाब का जल बहता नहीं, इसलिए कीचड़युक्त हो जाता है। पेड़ पर लगे फल टूटें नहीं तो सड़ जाते हैं। जहाँ फसल नहीं होती वह जमीन बंजर हो जाती है।

जीवन का भी यही हाल है। अत्यधिक संग्रह किया हुआ धन-संसाधन तरह-तरह की विपत्तियाँ ही पैदा करता है। और अधिक संग्रह की चाह जीवन को कोल्हू का बैल बना देती है। उसे सुरक्षित रखने की व्यवस्था में ही सारा समय बीतता है। समाज की कष्ट-कठिनाइयों का कारण यह संग्रह वृत्ति ही है।

आइये ! हम अपना दृष्टिकोण और अपनी जीवन शैली बदलें। यज्ञभाव के साथ जीवन जियें, सबकी सुख-शांति का आधार बनें।

प्राणवान युगतीर्थ

गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

शांतिकुंज में स्थापित युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा के स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा'

तीन उद्देश्य

1. व्यक्तित्व परिष्कार के लिए साधना
2. लोकमंगल के लिए समर्पित युग सैनिकों का प्रशिक्षण
3. संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन

प्रमुख ध्यानाकर्षण

1. 5 से 10 हजार साधक-लोकसेवियों की निरंतर उपस्थिति
2. पारिवारिक व्यवस्थाएँ : भोजन-आवास, प्रशिक्षण, संस्कार आदि का कोई शुक्ल नहीं।
3. लाखों-करोड़ों साधक हैं इस विराट देव परिवार के सदस्य, जिनके स्वैच्छिक अनुदान, अंशदान, समयदान और श्रमदान से और स्वानुशासन से चलती हैं सारी व्यवस्थाएँ

करोड़ों लोगों में निरंतर नवचेतना का संचार कर रही है नवयुग की ज्ञान-गंगोत्री

प्रतिदिन लगभग एक करोड़ गायत्री महामंत्र जप

- शांतिकुंज प.पू. गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी के भागीरथी तप से अनुप्राणित एक जीवंत-जाग्रत् तीर्थ है। यहाँ उपस्थित साधकों द्वारा प्रतिदिन लगभग एक करोड़ गायत्री महामंत्र का जप और यज्ञ होता है।

एक ही लक्ष्य - परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्

- यहाँ साधना करने वाले और प्रशिक्षण लेने वाले सभी साधक परमात्मा के युगों-युगों से चले आ रहे संकल्प 'परित्राणाय साधूनां, विनाशाय च दुष्कृताम्' से जुड़े हैं। सबका एक ही लक्ष्य है-पीड़ित, पतित, हताश, निराश मानवता में नवजीवन का संचार और समाज की गली-सड़ी मान्यताओं व परम्पराओं को समाप्त कर उन्हें प्रगतिशील आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए प्रेरित करना।

अलौकिक दिव्यता की सतत अनुभूति

- यह परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के तप और प्रेम की डोर से बने विराट देव परिवार के लाखों-करोड़ों साधकों का अपना घर, अपना गुरुद्वारा है। एक ही उद्देश्य और लक्ष्य के लिए समर्पित साधकों के अंतर्मन की उमंग और ऊर्जा, सभी के स्वानुशासन से स्थापित युगतीर्थ की पवित्रता, स्वच्छता, शालीनता प्रत्येक को अलौकिक दिव्यता की सतत अनुभूति कराती रहती है।

लोकसेवियों का सतत प्रशिक्षण

शांतिकुंज की स्थापना धर्म चेतना का जागरण और विस्तार करने वाली दिव्य आत्माओं को तलाशने, तराशने और उनमें नई उमंगों का संचारने के उद्देश्य से हुई है। तद्नुरूप यहाँ प्रशिक्षण के विविध सत्र निरंतर चलते रहते हैं।

- **9 दिवसीय संजीवननी साधना सत्र** : प्रत्येक माह की 1 से 9, 11 से 19 तथा 21 से 29 तक की तारीखों में।
- **एक मासीय लोकसेवी प्रशिक्षण सत्र** : प्रत्येक माह की 1 से 29 तक की तारीखों में।
- इनके अलावा त्रैमासिक संगीत सत्र, जीवन प्रबंधन सत्र, आपदा प्रबंधन सत्र, नारी जागरण सत्र, आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी सत्र तथा विविध रचनात्मक आन्दोलनों को गति देने के लिए आयोजित कई प्रकार के सत्रों के लिए अलग-अलग तिथियाँ निर्धारित हैं।
- सभी संस्कार आदर्श परंपराओं से निःशुल्क कराये जाते हैं।
- 1 से 3 दिन तक तीर्थ सेवन के लिए कभी भी आया जा सकता है।

उपरोक्त उद्देश्यों के लिए आने के इच्छुक परिजनों को पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। विस्तृत जानकारी इंटरनेट पर भी उपलब्ध है।

अधिक जानकारी एवं पूर्व अनुमति लेने के लिए संपर्क करें :-
शिविर विभाग, शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखंड)-249411
फोन : 9258369749 ई-मेल : shivir@awgp.in
ऑनलाइन : http://awgp.org/social_initiative/shivir

जीवन प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष है। जो उसका जितना सदुपयोग-साधना कर लेता है, वह उतना ही कृतकृत्य हो जाता है।

देव संस्कृति के उत्थान के लिए समर्पित अखिल विश्व गायत्री परिवार

वैचारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक क्रान्ति के लिए समर्पित लाखों देवात्माओं का विराट् संगठन

पावन गुरुसत्ता के पदचिह्नों पर चलते हुए मिशन को गति दे रहे हैं
स्नेह सलिला शैल दीदी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या

सन् 1994 में परम वंदनीया मातीजी के महाप्रयाण के बाद इस विराट देव परिवार के पथ प्रदर्शन की जिम्मेदारी शांतिकुंज के जिन वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं के पास आई, इन दिनों उसका नेतृत्व स्नेहसलिला शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी कर रहे हैं। कार्य आसान नहीं था। इस मिशन को गुरुदेव-माताजी ने जिस त्याग, प्रेम, समर्पण, उदारता, सहिष्णुता, सम्मान और सहकार के उदात्त आदर्शों के साथ सींचा था, उन्हीं के द्वारा इस महान उत्तरदायित्व को सँभाला जा सकता था। श्रद्धेया जीजी-डॉ. साहब न केवल इस कार्य को बखूबी सँभाल रहे हैं, बल्कि मिशन को नित नई ऊँचाइयाँ भी प्रदान कर रहे हैं।

श्रद्धेया शैल जीजी तो गुरुदेव-माताजी की बेटी हैं। उन्हें तो गुरुदेव-माताजी ने बचपन से ही गढ़कर ममता, करुणा की जीती-जागती प्रतिमा बनाया है। इसीलिए तो उनके प्रेम के दो बोल सुनकर सुलगते हृदय में शीतलता का संचार हो जाता है। उनकी श्रद्धासिक्त वाणी कार्यकर्त्ताओं में नये जोश और उल्लास का संचार कर देती है।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल दीदी

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी अपने समर्पण, अपनी साधना और त्याग भावना के बल पर लाखों युवाओं की एक नई पीढ़ी गढ़ रहे हैं। वे उनके आदर्श हैं। वे गोल्ड मैडलिस्ट डॉक्टर (एम. डी.) हैं, लेकिन गुरुदेव के आह्वान पर विदेशी नौकरी का लालच तथा ऐशोआराम की जिंदगी छोड़कर पूरी तरह लोकमंगल के लिए समर्पित हो गये। उनके कुशल नेतृत्व और अथक परिश्रम के आधार पर मिशन ने कई गुना प्रगति की है।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी

- 12 वर्षों तक परम पूज्य गुरुदेव का निकटतम सान्निध्य मिला। उन्हीं ने तराशा और गढ़ा।
- मासिक अखण्ड ज्योति पत्रिका के संपादक-लेखक।
- देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति।
- वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की प्रतिष्ठा के लिए ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के निदेशक रहते हुए शोधकार्य किये।
- लगभग 80 देशों की प्रव्रज्या, युग चेतना का विस्तार किया।
- इंग्लैण्ड के हाउस ऑफ लॉर्ड्स एवं हाउस ऑफ कॉमन में ऐतिहासिक उद्‌बोधन।
- स्पेस सेण्टर नासा द्वारा 'भारतीय संस्कृति के वैज्ञानिक प्रतिपादक एवं सुधारक' के रूप में सम्मानित।
- देश-विदेश के अनेकों राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठानों द्वारा सम्मानित।

गायत्री परिवार द्वारा संचालित विभिन्न आन्दोलन
महत्ता और आवश्कता समझें, सहयोगी बनें

साधना : युग तभी बदलेगा, जब मानव में देवत्व जगेगा। व्यक्ति को आंतरिक और सामाजिक बुराइयों से लड़ने तथा आदर्शों को अपनाने के लिए आत्मबल और विवेक की दृष्टि चाहिए। यह गायत्री उपासना एवं जीवन साधना से संभव है। गायत्री परिवार के सदस्यों द्वारा न केवल व्यक्तिगत साधना की जा रही है, बल्कि सामूहिक जप एवं मंत्र लेखन साधना अनुनष्ठान भी चलाये जा रहे हैं।

सामूहिक गायत्री साधना का उद्‌देश्य आसुरी शक्तियों को परास्त करने के लिए माँ दुर्गा की तरह संघशक्ति का सृजन करना तथा सूक्ष्म जगत में व्याप्त विषाक्तता का शमन करना भी है। गायत्री साधना लोगों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित कर सृजनात्मक कार्यों में प्रवृत्त करती है।

शिक्षा : पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से आज किताबी ज्ञान प्राप्त करने एवं डिग्री हासिल करने को ही शिक्षा मान लिया गया है। वास्तविक शिक्षा तो अकूत सामर्थ्यवान जीवन के रहस्यों जानने, सुप्त शक्तियों को जगाने तथा आदर्शों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। पुस्तकों के अध्ययन से पूर्वजों के ज्ञान का लाभ मिलता है।

गायत्री परिवार संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन, नैतिक शिक्षा के समानान्तर क्रम, बाल संस्कार शाला, प्रौढ़ शिक्षा जैसे माध्यमों से इस दिशा में अपना भरपूर योगदान दे रहा है। वर्तमान शिक्षण संस्थानों की परम्परा में देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार प्राचीन और अर्वाचीन शिक्षा के संयोग से विद्यार्थियों के समग्र और सही विकास का अद्वितीय आदर्श प्रस्तुत कर रहा है।

स्वास्थ्य : आज भौतिक सोच वाली जीवन शैली मानवीय स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़ा खतरा है। गायत्री परिवार अपने स्वास्थ्य आन्दोलन के अंतर्गत लोगों को प्रकृति के अनुरूप संयमित जीवन जीने, आयुर्वेद से स्वास्थ्य रक्षा करने, योगाभ्यास से शारीरिक-

> परम पूज्य गुरुदेव ने व्यक्ति, परिवार और समाज के नवनिर्माण के लिए शतसूत्री कार्यक्रम दिए हैं। कुछ विशिष्ट आन्दोलनों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है।

मानसिक संतुलन स्थापित करने व शक्ति संवर्धन करने के लिए प्रशिक्षण एवं अभ्यास कराता है।

स्वावलम्बन : बेरोजगारी और मुनाफाखोरी आज की बहुत बड़ी समस्या है। यदि अपने क्षेत्र के कच्चे सामान के प्रसंस्करण का अभियान चल पड़े और उन्हीं का उपयोग करने का क्रम चल पड़े तो दोनों समस्याओं का समाधान संभव है। गायत्री परिवार लोगों को अनेक प्रकार के कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलम्बी बना रहा है।

नारी जागरण : हमारे समाज के पतन का एक बड़ा कारण मातृशक्ति की उपेक्षा-अवहेलना भी रहा है। पहले नारी घर की चाहरदीवारी में कैद थी, आज वह विकास तो कर रही है, लेकिन उसके कदम भौतिकता की चकाचौंध में भटक रहे हैं। यदि नारी शालीन, संस्कारवान होगी तो वह अपने घर को स्वर्ग बना लेगी। तब बच्चे भी उच्छृंखल और उद्‌दण्ड नहीं, सभ्य और संस्कारवान होते चले जायेगें।

गायत्री परिवार के नारी जागरण अभियान के प्रभाव से देश की लाखों देवियों ने सेवा, साधना और लोकमंगल की दिशा में कदम बढ़ाते हुए अपने घर-परिवार का वातावरण ही बदल दिया है।

पर्यावरण संरक्षण : पर्यावरण प्रदूषण आज मानव ही नहीं, प्राणिमात्र के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा संकट बनकर खड़ा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार ने इस संकट के निवारण के लिए वृक्षारोपण, जल स्रोतों की सफाई, संरक्षण, ग्राम-नगरों में सफाई जैसे अनेक कार्य बृहद् स्तर पर किए हैं।

व्यसन-कुरीति उन्मूलन : आज कमाने और पाने से ज्यादा आवश्यकता सँभालने और बचाने की है। नशे ने स्वास्थ्य, परिवार की सुख-शांति, बच्चों का जीवन सब कुछ बर्बाद कर रखा है, लेकिन व्यक्ति है कि मानता ही नहीं।

इसी प्रकार समाज में मृतक भोज, दहेज-दिखावा, बलिप्रथा, फैशन, तंत्र-मंत्र, टोना-टोटका जैसी अनेक कुरीतियाँ विद्यमान हैं। गायत्री परिवार ने इन सबके विरुद्ध सशक्त आन्दोलन चला रखा है। इस परिवार से जुड़े लोग स्वयं इन्हें अपनाकर अपना आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं।

गर्भ संस्कार महोत्सव : समाज के हर वर्ग में बच्चों को संस्कारवान बनाने के प्रति जागरूकता बढ़ी है। गायत्री परिवार ने इसके लिए एक बृहद् अभियान चलाया है। इसके माध्यम से गर्भिणी बहिनों का गर्भ संस्कार (पुंसवन संस्कार) कराया जाता है और बच्चे के शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, बौद्धिक एवं वैचारिक स्वास्थ्य के लिए अपनाये जाने योग्य सूत्र गर्भिणी और उसके परिवारी जनों को बताये जाते हैं।

इस अभियान के प्रति डॉक्टरों और सरकारी प्रतिष्ठानों में विशेष जागरूकता आ रही है। उनकी कार्यशालाएँ आयोजित कर गर्भस्थ शिशु पर गर्भिणी के आहार, विचार, व्यवहार के प्रभावों की जानकारी वैज्ञानिक तथ्यों के साथ दी जाती है।

विचार क्रांति अभियान : अखिल विश्व गायत्री परिवार का प्रमुख अभियान है विचार क्रांति अभियान। व्यक्ति की सोच बदल जाये तो उसकी समस्याएँ स्वतः हल हो जायेंगी, जीवन बदल जायेगा। इसके लिए झोला पुस्तकालय, ज्ञानरथ, पुस्तक मेले तथा मासिक पत्रिकाओं के माध्यम से युगऋषि के क्रांतिकारी विचारों को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाया जा रहा है और उसका शानदार प्रभाव भी लोगों पर पड़ रहा है।

पंचतीर्थ, प्रमुख स्थापनाएँ

जन्मभूमि आँवलखेड़ा, आगरा (उ.प्र.)

अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा (उ.प्र.)

गायत्री तपोभूति, मथुरा (उ.प्र.)

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

गायत्री चेतना केन्द्र, मुन्स्यारी (उत्तरा.)

युगतीर्थ शांतिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
यह अखिल विश्व गायत्री परिवार का मुख्यालय है। यहाँ साधना, प्रशिक्षण, संस्कारों का अनवरत क्रम चलता है (देखें पृष्ठ 5)। यहीं से अखिल विश्व गायत्री परिवार के विश्वव्यापी केन्द्र, शाखाओं का संचालन-मार्गदर्शन होता है।

जन्मभूमि आँवलखेड़ा, आगरा (उत्तर प्रदेश)
आगरा-जलेसर रोड़ पर स्थित ग्राम आँवलखेड़ा परम पूज्य गुरुदेव की जन्मभूमि है। यहीं हिमालयवासी गुरुसत्ता के साथ पू. गुरुदेव का साक्षात्कार हुआ, यहीं रहकर उन्होंने साधना पुरश्चरण किये, स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। इन दिनों इसे आदर्श ग्राम विकास के केन्द्र और देश के प्रमुख पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जा रहा है।

अखड ज्योति संस्थान, मथुरा (उत्तर प्रदेश)
मथुरा में यह परम पूज्य गुरुदेव की आवास एवं साधना स्थली रही। यहीं से अखण्ड ज्योति का प्रकाशन और विपुल साहित्य की संरचना उन्होंने की।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा (उत्तर प्रदेश)
परम पूज्य गुरुदेव ने गायत्री परिवार के संगठन का शुभारंभ यहीं से किया। वे सन् 1971 तक तपोभूमि से ही मिशन की गतिविधियों का संचालन करते रहे। यह आज भी गायत्री परिवार के साहित्य प्रकाशन का प्रमुख केन्द्र है।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार (उत्तराखंड)
परम पूज्य गुरुदेव ने इसकी स्थापना प्रथम शक्तिपीठ के रूप में की। यह अध्यात्म के वैज्ञानिक प्रभाव का अध्ययन करने के लिए शोध केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखंड)
आधुनिक शिक्षा के साथ विद्यार्थियों आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं समग्र विकास के लिए संकल्पित विश्व का यह अद्वितीय विश्वविद्यालय है। 16 वर्ष के छोटे से कार्यकाल में विश्व के कई देशों के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों-शिक्षण संस्थानों के साथ शैक्षिक शोध एवं सहयोग के लिए संबंध स्थापित हुए हैं। यहाँ के स्नातक अनेक देशों में सेवा करते हुए नवसृजन अभियान को गति दे रहे हैं।

गायत्री चेतना केन्द्र, मुन्स्यारी, पिथौरागढ़ (उत्तराखंड)
देवात्मा हिमालय के उत्तुंग शिखर पर नव प्रतिष्ठित यह शक्तिपीठ गायत्री साधकों को अलौकिक दिव्यता की अनुभूति कराता है। यहाँ से पंचाचूली के हिमाच्छादित शिखरों के दर्शन होते हैं। इस चेतना केन्द्र का संचालन शांतिकुंज, हरिद्वार से होता है। वहीं से अनुमति प्राप्त साधकों को मुनस्यारी साधना के लिए भेजा जाता है।

4500 शक्तिपीठें, 62 हजार शाखाएँ

अखिल विश्व गायत्री परिवार के नवसृजन अभियान को गतिशील करने के लिए पूरे देश और विदेशों में गायत्री चेतना केन्द्र, शक्तिपीठें, प्रज्ञापीठें स्थापित हैं। भारत में लगभग 4500 शक्तिपीठें और 62 हजार प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, युवा मण्डल आदि विविध प्रचारात्मक एवं रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से युगऋषि के संदेश को घर-घर पहुँचा रहे हैं। गायत्री चेतना केन्द्र और शक्तिपीठों पर साधना, प्रशिक्षण, संस्कार, स्वावलम्बन, कुरीति उन्मूलन जैसे कार्यक्रम नियमित रूप से चल रहे हैं।

संसार में दरिद्रता, विपन्नता, विडंबना, विभीषिका के जो अनेकानेक संकट दृष्टिगोचर होते हैं, वे मात्र चिन्तन में निकृष्टता और चरित्र में भ्रष्टता बढ़ जाने के कारण ही हैं।

भारत की धर्ममय संस्कृति के पाँच प्रमुख आधारों की महिमा

गौ, गंगा, गीता, गायत्री के अवलम्बन से ही राष्ट्र, सबल, स्वावलम्बी, श्रेष्ठ, समृद्ध, सुखी हो सकता है

भारत की संस्कृति धर्म-प्रधान, ऋषि और कृषि प्रधान है। अपने सर्वोच्च, सर्वोपयोगी मूल्य, सिद्धान्त, ज्ञान के आधार पर इसने पूरे विश्व का पथ प्रदर्शन किया है, इसीलिए भारत जगद्गुरु कहलाया। गुरु परम्परा और चार स्तम्भ-गौ, गंगा, गीता, गायत्री पर आधारित हमारी संस्कृति इतनी प्रबल है कि अनेकों आघात सहने के बाद भी यह न केवल अक्षुण्ण है, बल्कि सारे विश्व को शान्ति, समृद्धि का मार्ग भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों में ही दिखाई देता है। यह चारों पूज्य हैं एवं पुण्यदायी हैं। हमारे देश में इन्हें 'माता' का सम्मान दिया जाता है। आवश्यकता इनके महत्त्व को जानने तथा जनजीवन की गहराइयों में पुनः प्रतिष्ठित करने की है। कुम्भ मेले जैसे आयोजनों में गुरुजन इन चारों के महत्त्व का भरपूर प्रतिपादन करते रहे हैं।

गायत्री वेदों का सार है

गायत्री 'वेदमाता' है। गायत्री भारतीय संस्कृति का सनातन एवं अनादि मंत्र है। जो फल चारों वेदों के अध्ययन से होता है, वह एक मात्र गायत्री मंत्र के जप से हो सकता है। महाभारत के रचयिता वेद व्यास गायत्री की महिमा में कहते हैं जैसे फूलों में शहद, दूध में घी सार रूप में होता है, वैसे ही समस्त वेदों का सार गायत्री है।

ऋग्वेद में 6/62/10 का मन्त्र गायत्री मन्त्र ही है। सामवेद के 93/3/3 उत्तरार्चिक में और यजुर्वेद में दो-तीन स्थानों में गुरुमन्त्र का आदेश है। 3/35, 30/2 और 36/3 पर अथर्ववेद में तो यह सारा रहस्य ही खोल दिया है कि यह वेद-माता, गायत्री-माता, द्विजों को पवित्र करने वाली, आयु, स्वास्थ्य, सन्तान, पशु, धन, ऐश्वर्य, ब्रह्मवर्चस् देने वाली और ईश्वर दर्शन कराने वाली है। छान्दोग्योपनिषद् ने भी इसकी महिमा का गायन किया है।

गायत्री के 24 अक्षरों में वेद, शास्त्र, पुराण, स्मृति, उपनिषद् आदि की शिक्षाएँ हैं। इनके अवलम्बन से मनुष्य व्यक्तिगत, सामाजिक और परमार्थिक सुख-शान्ति प्राप्त कर सकता है।

गीता में भगवान कृष्ण ने स्वयं कहा है-गायत्री छंदसामहम् अर्थात् छंदों में गायत्री मंत्र मैं स्वयं ही हूँ।

गायत्री-मंजरी में लिखा है-

भूलोकस्यास्य गायत्री कामधुनुर्मतार्बुधैः।
लोक आश्रयणेनामुं सर्वमेवाधिगच्छति॥ 29॥

विद्वानों ने गायत्री को भूलोक की कामधेनु माना है, संसार इसका आश्रय लेकर सब कुछ प्राप्त कर लेता है।

भगवान मनु कहते हैं कि जो पुरुष प्रतिदिन आलस्य त्याग कर तीन वर्ष तक गायत्री का जप करता है, वह आकाश की तरह व्यापक परब्रह्म को प्राप्त होता है।

गंगा सनातन संस्कृति की जीवन धारा है

पौराणिक मान्यता है कि गंगा का जन्म भगवान् विष्णु के पैरों से हुआ था। यह शिव जी की जटाओं में निवास करती हैं। गंगा स्नान, पूजन और दर्शन करने से पापों का नाश होता है, व्याधियों से मुक्ति होती है। गंगा में जल ही नहीं, हमारी सनातन संस्कृति प्रवाहित हो रही है। गंगा भारत की जीवनधारा है। गंगा सेवन के लाभ अद्भुत और चमत्कारिक हैं। इन्हीं विशेषता और महानता को दृष्टि में रखकर ही इसे हिन्दू धर्म में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

गंगा के महत्व का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

गंगा नदी और गंगाजल अपने इसके विशेष गुण के कारण मूल्यवान है। इसका जल अपनी शुद्धता और पवित्रता को लम्बे समय तक बनाये रखता है। वर्षों प्रयोग करने और रखने पर भी गंगाजल खराब नहीं होता है। गंगाजल में जड़ी-बूटियों के साथ गंधक, चाँदी, सोना, अभ्रक मानवमात्र के लिए उपकारी तत्त्वों का समावेश है।

इसके जल के नियमित सेवन व स्नान से सेवन और स्नान से मनुष्य को असंख्य रोग नष्ट होते हैं तथा शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक स्वास्थ्य लाभ होते हैं। वैद्यक ग्रन्थों का मत है कि इसमें स्वास्थ्य को सबल बनाने और संक्रामक जीवाणुओं को नाश करने की शक्ति है। यह अजीर्ण, पुराना ज्वर, तपेदिक, पेचिश, दमा, मस्तक शूल आदि रोगों के लिए लाभदायक है। यह प्रयोग करके देखा भी गया है कि गंगाजल के प्रयोग से कोढ़ रुक जाता है। कोढ़ के रोगियों को गंगा किनारे रखने का प्रयोजन यही है कि वहाँ की जलवायु से कुष्ठ रोग अच्छा हो जायेगा।

गंगाजल सेवन का प्रभाव अद्वितीय है। हालाँकि इसका रहस्य बहुत हद तक आज भी अज्ञात है। कुछ लोग इसे चमत्कार कहते हैं और कुछ लोग इसे जड़ी-बूटियों और आयुर्वेद से जोड़ते हैं, विज्ञान भी इसके दैवीय गुणों को स्वीकार करता है। आध्यात्मिक जगत में इसको सकारात्मक उर्जा का चमत्कार कह सकते हैं।

गोमाता हमारी ऋषि-कृषि संस्कृति का आधार व पोषक है

गौ माता भारतीय संस्कृति की ज्वलन्त प्रतीक है। प्राचीन काल में आर्यों ने गाय की पूजा करते हुए कहा है-'मातेव रक्षति।' अर्थात् यह माता हमारी रक्षा करें। पुराणों में कामधेनु का वर्णन है, जो सभी इच्छाओं की पूर्ति करती है। योगश्वर श्री कृष्ण ने गाय की सेवा कर गौपालन और गौसंवर्धन की प्रेरणा दी है। गृह सूत्रों में गाय को सर्वोत्तम धन माना है और विवाह आदि संस्कारों में दक्षिणा के रूप में गाय दान का विधान बनाया है। अथर्ववेद में गौ-सूक्तों में लिखा है-

माता रुद्राणां दुहिता वसूना स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्रभु वोच चकितुषे जनाय मा गामनागामदिति वधिष्ट॥

अर्थात्-गाय रुद्रों की माता, वसुओं की पुत्री, अदिति पुत्रों की बहिन और घृत रूप अमृत का खजाना है। प्रत्येक विचारशील को चाहिए कि निरपराध एवं अवध्य गौवंश का वध न करें।

ऋग्वेद ने गाय को अघन्या कहा है। यजुर्वेद कहता है कि गौ अनुपमेय है। अथर्ववेद में गाय को संपत्तियों का घर कहा गया है।

अथर्ववेद में लिखा है-'धेनु सदानाम दईनाम।' अर्थात् गाय समृद्धि का मूल स्त्रोत है। वह सृष्टि के पोषण का स्त्रोत है, जननी है।

गौमाता में देवताओं का वास है

हिन्दू धर्म के अनुसार गाय में 33 कोटि देवी-देवता निवास करते हैं। यहाँ 'कोटि' का अर्थ करोड़ नहीं, प्रकार से है। इसका मतलब गाय में 33 प्रकार के देवता निवास करते हैं। ये देवता हैं- 12 आदित्य, 8 वसु, 11 रुद्र और 2 अश्विन कुमार।

- पौराणिक मान्यताओं व श्रुतियों के अनुसार, गौएँ साक्षात् विष्णु रूप हैं, गौएँ सर्व वेदमयी और वेद गौमय है। भगवान श्रीकृष्ण को सारा ज्ञानकोष गोचरण से ही प्राप्त हुआ।
- भगवान राम के पूर्वज महाराजा दिलीप नन्दिनी गाय की पूजा करते थे।
- भगवान शिव के प्रिय 'बिल्व पत्र' की उत्पत्ति गाय के गोबर से ही हुई थी।
- भगवान भोलेनाथ का वाहन नन्दी दक्षिण भारत की आंगोल नस्ल का सांड था। जैन आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का चिह्न बैल था।
- गरुड़ पुराण के अनुसार वैतरणी पार करने के लिए गोदान का महत्त्व बताया गया है।

गीता जीवन-पथ प्रदर्शक सर्वोत्तम ग्रंथ है

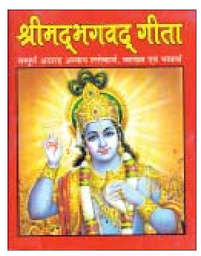

गीता एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है जिस पर दुनियाभर की भाषा में सबसे ज्यादा भाष्य, टीका, व्याख्या, टिप्पणी, निबंध, शोध ग्रन्थ आदि लिखे गये हैं।

गीता हिन्दुओं का एकमात्र सर्वमान्य धर्म ग्रन्थ है। इसमें ज्ञान, बुद्धि, कर्मयोग और आत्मिक, नैतिक शिक्षा का अक्षय भंडार है। गीता का ज्ञान जीवन के हर क्षेत्र और हर स्थान को प्रकाशित करता है। भगवान श्रीकृष्ण के श्रीमुख से उच्चारित यह उपदेश जीवन की प्रत्येक गुत्थी को सुलझाने और गाँठ को खोल देने की सामर्थ्य रखता है।

श्रीमद्भगवद्गीता श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच हुआ एक संवाद है, लेकिन कहते हैं कि भगवान श्रीकृष्ण के माध्यम से उस काल रूप परम परमेश्वर ने गीता का ज्ञान विश्व को दिया। गीतोपदेश के समय भगवान श्रीकृष्ण योगारुढ़ थे।

श्रीमद्भगवद्गीता में ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, एकेश्वरवाद की अति सुन्दर ढंग से चर्चा की गई है। गीता ही कहती है कि ब्रह्म-ईश्वर एक ही है। गीता को बार-बार पढ़ने से उसके गूढ़ज्ञान का रहस्य खुलता जाता है। यह ज्ञान इतना गूढ़ है कि इसके प्रत्येक शब्द पर एक अलग ग्रन्थ लिखा जा सकता है। गीता में सृष्टि की उत्पत्ति, जीवन विकास का क्रम, मानव उत्पत्ति से लेकर दैनिक जीवन से जुड़े योग, धर्म, कर्म, ईश्वर, भगवान्, देवी-देवता, आत्मा, मोक्ष, उपासना, प्रार्थना, यम, नियम, प्राणियों में मैत्री भाव, राजनीति, युद्ध, राष्ट्र निर्माण सम्बन्धी सूत्र निहित हैं। इसमें अंतरिक्ष, आकाश, धरती, संस्कार, वंश, कुल, नीति, अर्थ, पूर्व जन्म, जीवन प्रबन्धन, कर्म सिद्धान्त के सम्बन्ध में मार्गदर्शन करती है।

मनुष्य जीवन मिलना सरल है, लेकिन मनुष्यता तो गुरुकृपा से ही मिलती है

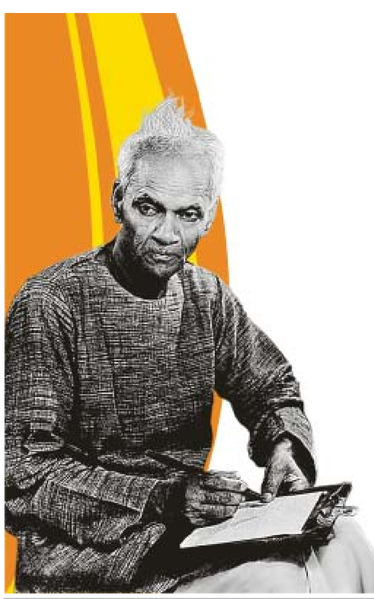

जीवन में गुरु की महत्ता निर्विवाद सर्वोपरि है। गुरु जीवन के शिल्पकार है, कुम्भकार है। उसे देखते हुए ही हमारी सनातन संस्कृति में गुरु को ईश्वर से भी ऊँचा पद दिया गया है। ईश्वर के अस्तित्व में मतभेद हो सकता है, किन्तु गुरु के लिए कोई मतभेद आज तक उत्पन्न नहीं हो सका। गुरु को सभी ने माना है। संत कबीर कहते हैं-हरि रुठे गुरु ठौर है, गुरु रुठे न हि ठौर है।

शास्त्रों में 'गु' का अर्थ अंधकार या मूल अज्ञान बताया गया है और 'रु' का अर्थ है-उसका निरोध। तद्नुसार गुरु वे होते हैं जो अपने शिष्य के अज्ञान तिमिर का निवारण ज्ञानांजन शलाका से कर देते हैं। गुरु अंधकार को हटाकर प्रकाश की ओर ले जाते हैं। वे धर्म का मार्ग दिखाते हैं। श्री सद्गुरु आत्म-ज्योति पर पड़े हुए आवरण को हटा देते हैं।

गुरु को प्रेरक, प्रथम आभास देने वाला, सच्ची लौ जगाने वाला और कुशल आखेटक कहा गया है जो अपने शिष्य को उपदेश के वाणों से वींध कर उसमें प्रेम की पीर संचारित कर देता है।

मनुष्य जीवन मिलना सरल है, लेकिन मनुष्यता तो गुरुकृपा से ही मिलती है। परम पूज्य गुरुदेव ने इस संदर्भ में लिखा है-*भारतीय संस्कृति में माता, पिता और गुरु की तुलना त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश से की गई है। माता ब्रह्मा है, क्योंकि वह अपना पेट काटकर, बालक का शरीर बनाकर उसे जन्म देती है। पिता को विष्णु माना गया है, क्योंकि वह बच्चे का भरण-पोषण करता है। गुरु की गरिमा इन दोनों से ऊँची है। माता-पिता तो केवल शरीर का सृजन-पोषण ही करते हैं, जबकि गुरु आत्मा में, व्यक्तित्व में सुसंस्कारिता का आरोपण करके इसी जन्म में दूसरा जन्म प्रदान करता है, द्विजत्व प्रदान करता है।*

गुरु कोई शरीरधारी व्यक्ति ही हो, ऐसी अनिवार्यता नहीं है। गुरु एक चेतना है। साधकों को व्यावहारिक पथ प्रदर्शन करने के लिए इस दिव्य चेतना को जीवन में धारण करने वाले सद्गुरुओं की आवश्यकता होती है, लेकिन वे अपने शिष्य का अपनी योग्यता और क्षमता के अनुरूप ही मार्गदर्शन कर पाते हैं। पूज्य गुरुदेव ने लिखा है-ऋतंभरा को इष्ट माना जाय, यही मानव जीवन की सर्वोपरि उपलब्धि है। आत्मज्ञान-ब्रह्मज्ञान इसी को कहा गया है। विवेकशीलता, दूरदर्शिता यही है। न्याय और औचित्य इसी के प्रतिफल हैं।

गुरुदेव लिखते हैं-गायत्री को इष्ट मानने की अनादि परम्परा रही है। त्रिदेवों की उपास्य गायत्री रही है। दत्तात्रेय के चौबीस गुरु गायत्री के 24 अक्षर ही हैं। ''नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते'', 'आत्मा वाऽऽरे ज्ञातव्यः श्रोतव्यः मन्तव्यः निदिध्यासितव्यः' जैसे उद्बोधन वाक्यों में जिस आत्मज्ञान की गरिमा बताई गई है, वही महाप्रज्ञा आदिशक्ति गायत्री है। उसी का हमें वरण करना चाहिए।

सत्याचरणी को कोई धोखा दे ही नहीं सकता, क्योंकि उसके सामने झूठ बोलना अशक्य हो जाना चाहिए। - महात्मा गाँधी

आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री ने अभियान का स्वागत

उत्तर प्रदेश में 'हरिद्वार पहुँचा आपके द्वार' अभियान का शुभारम्भ देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के लखनऊ प्रवास के साथ हुआ। इस प्रवास में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने प्रदेश की राज्यपाल माननीया श्रीमती आनंदीबेन पटेल एवं मुख्यमंत्री माननीय श्री योगी आदित्यनाथ जी से भी भेंट कर शान्तिकुञ्ज की ज्ञानगंगा और गंगा अमृत कुम्भ भेंट किए। इस अवसर पर उन्होंने अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में राष्ट्र जागरण के लिए किए जाने वाले प्रयासों की जानकारी दी।

डॉ. चिन्मय जी बायें राज्यपाल श्रीमती आनन्दी बेन पटेल को और दायें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को कुम्भ और शान्तिकुञ्ज के प्रतीक भेंट करते हुए

माननीया राज्यपाल और मुख्यमंत्री जी ने घर-घर यज्ञ, घर-घर संस्कार, घर-घर गंगा कार्यक्रम को सांस्कृतिक चेतना के जागरण का एक महत्वपूर्ण अभियान बताया। इसकी सफलता के लिए उन्होंने अपनी शुभकामनाएँ दी हैं। मुख्यमंत्री जी ने शान्तिकुञ्ज आकर अभियान को विस्तार से जानने का आमंत्रण भी स्वीकार किया।

मध्य प्रदेश में छाई है उत्साह की अद्भुत लहर

तीन लाख से अधिक घरों में अमृत कुम्भ और शान्तिकुञ्ज के प्रतीकों की स्थापना का संकल्प

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के जावद, पिपल्यामंडी, मन्दसौर, नीमच, इन्दौर, देवास, उज्जैन एवं रतलाम प्रवास की उत्साहवर्धक झलकियाँ

'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' कार्यक्रम को लेकर पूरे देश में अभूतपूर्व उत्साह है। मध्य प्रदेश के लगभग हर जिले-ब्लॉक स्तरीय संगठनों ने इसके निमित्त गोष्ठियाँ आयोजित कर अपनी कार्ययोजना निर्धारित करते हुए कार्यकर्त्ताओं को जिम्मेदारियाँ सौंप दी हैं। पूरे मध्य प्रदेश से तीन लाख से अधिक घरों तक कुम्भ और शांन्तिकुञ्ज के प्रतीकों को पहुँचाने के संकल्प उभरे हैं। अगले दिनों घर-घर यज्ञ, घर-घर संस्कार की श्रृंखला चलाकर इन्हें देव परिवार के रूप में विकसित किया जाएगा।

इन दिनों आदरणीय डॉ. चिन्मय जी, प्रतिकुलपति देसंविवि. आत्मीयजनों का उत्साहवर्धन करने विभिन्न क्षेत्रों में पहुँच रहे हैं। प्रथम प्रवास में वे राजस्थान के जयपुर, भीलवाड़ा बाद वे मंदसौर जिले में पहुँचे थे, वहीं उनका दूसरा प्रवास इन्दौर, देवास, उज्जैन और रतलाम जिलों का रहा। उन्होंने कई शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठों पर कार्यकर्त्ता गोष्ठियों को सम्बोधित किया। उन्होंने देव परिवार निर्माण के लिए हर घर गंगाजली व देवस्थापना का क्रम चलाने, हर घर कुंभ, घर-घर यज्ञ, घर-घर संस्कार का संदेश पहुँचाने की मूल अवधारणा को विस्तार से बतलाया व उपस्थित सभी परिजनों से भेंट वार्ता की।

डॉ चिन्मय जी ने बताया कि हम सभी का सौभाग्य है कि हम युगद्रष्टा, युगऋषि तपोनिष्ठ परम पूज्य गुरुदेव व वंदनीया माताजी से अनन्य रूप से जुड़े हैं। जीवन साधना और अपनी गुरुसत्ता के प्रति समर्पण का भाव ही हमारी सफलता का आधार है। गायत्री परिवार रूपी यह विराट संगठन साधना की शक्ति से ही खड़ा है। ऐसा और कोई उदाहरण नहीं है, जहाँ साधना की धुरी पर करोड़ों लोगों का संगठन बना हो और उसने सतयुग की वापसी का संकल्प लिया हो।

यह एक सुखद संयोग है कि यह वर्ष-2021 कुंभ पर्व का और शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार की स्थापना का स्वर्ण जयंती का वर्ष है। कोविड विपदा के कारण इस समय सबका हरिद्वार पहुँचना संभव नहीं है, अतः हमें कुंभ के अमृत को घर-घर पहुँचाकर लोगों की आस्था का पोषण और परिष्कार करना है। आने वाला हर दिन खुशियाँ, प्रकाशमय भविष्य, उज्ज्वल संभावनाएँ एवं बहुमुखी उत्कर्ष की सौगात लेकर आए, ऐसी प्रार्थना के साथ हमें घर-घर तक युगऋषि का संदेश पहुँचाना होगा।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि के संग जावद के प्रमुख कार्यकर्त्तागण

गायत्री शक्तिपीठ केशर बाग में आयोजित विशाल कार्यकर्त्ता गोष्ठी

महाकाल की नगरी उज्जैन में युगनिर्माणी आस्था की झाँकी

रतलाम में कुम्भ के प्रतीकों की स्थापना

पिपल्यामण्डी में 'सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा' के लिए भूमिपूजन

प्रवास के कुछ उल्लेखनीय प्रसंग

- आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के कर कमलों द्वारा पिपलियामण्डी में गुरुसत्ता के पावन स्मारक 'सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा' निर्माण हेतु भूमि पूजन किया गया।
- आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के द्वारा गायत्री प्रज्ञापीठ विजयनगर देवास में श्री राम स्मृति उपवन का अवलोकन किया गया।
- अपनी इस यात्रा के दौरान जिन परिवारों में एवं संस्थाओं में डॉ चिन्मय जी गये, वहाँ आत्मीयता विस्तार हेतु गंगाजली एवं देवस्थापना की।
- रतलाम जिले के रिंगनौद गाँव के महिला मंडल के द्वारा भी ग्राम के प्रत्येक घर में गंगाजली स्थापना का संकल्प लिया गया है।
- इस कार्यक्रम के प्रति पूरे क्षेत्र में कार्यकर्ताओं के मन में असीम उत्साह देखा गया।

संयुक्त राष्ट्र के तत्त्वावधान में आयोजित प्रार्थना सभा में गूँजा गायत्री महामंत्र

रिलीजन फॉर पीस' नामक वैश्विक संगठन द्वारा विश्व शान्ति के लिए आयोजित की गई थी प्रार्थना सभा

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि को मिला अपने देश का प्रतिनिधित्व करने का सौभाग्य

'रिलीजन फॉर पीस' संस्थान पिछले 50 वर्षों से धार्मिक प्रतिनिधियों को एकजुट करने व विविध धर्मों के मध्य सामंजयस्यपूर्ण संवाद स्थापित करने में अपनी भूमिका निभा रहा है।

वर्तमान समय में सारे विश्व में स्वार्थ, अविश्वास, विस्तारवाद, कट्टर सोच के कारण छायी अशान्ति को दूर करने में प्रगतिशील विचारधारा वाले धार्मिक संगठन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। वे परस्पर मिलकर विश्व में सामञ्जस्य, सद्भाव का वातावरण बना सकते हैं। 'रिलीजन फॉर पीस' नामक वैश्विक संगठन इस दिशा में प्रशंसनीय प्रयास कर रहा है। इसी क्रम में संस्थान द्वारा संयुक्त राष्ट्र के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष नववर्ष के अवसर पर एक वैश्विक प्रार्थना सभा का आयोजन किया जाता है।

कोविड-19 संकट के कारण इस वर्ष यह सभा 5 जनवरी 2021 को ऑनलाइन ही आयोजित हुई। विश्व के विविध धर्म, परम्परा व आयु के प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया। हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व करने का सौभाग्य शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देसंविवि. तथा साध्वी भगवती सरस्वती जी को मिला।

डॉ. चिन्मय जी ने विश्व में एकता, शान्ति, सद्भाव एवं सकारात्मकता का वातावरण स्थापित करने में गायत्री मंत्र के प्रभाव की चर्चा की। उन्होंने युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के सर्वमान्य विचारों के आधार पर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के विस्तार की आवश्यकता बताई। इसके क्रियान्वयन के लिए परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताए गए बहुमूल्य सूत्रों की चर्चा भी की। 'रिलीजन फॉर पीस' के प्रयासों की प्रशंसों करते हुए उन्होंने आशा व्यक्त की कि सबके सहयोग से मानवता उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर होगी।

सभा में रिलीजन फॉर पीस संस्थान के महासचिव प्रो० अज्जा करम व अध्यक्ष प्रीस्टेस बीट्रिज शूल्थेस, श्री होमी गांधी (पारसी), रब्बी जोसेफ पोटसनिक (यहूदी), बहाई धर्म से सुश्री बानीगल, व श्री साफिरारमेशफर प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। बौद्ध, धर्म से महामहीम क्योचि सूगिनो; ईसाई धर्म से महामहीम जॉन कार्डिनल, महामहीम क्रिस्चन डेल, महामहीम मार्क फाउलर आदि महानुभाव ने; मुस्लिम धर्म से इमाम मोहेमद मैजिद, महामहीम मोहेमद अब्देलसलम, इमाम सएद अली अब्बास ने; सिख धर्म से भाई साहिब मोहिंदर सिंह व डॉ० प्रीतपाल कौर अहलुवलिया ने भाग लिया।

कुम्भ विचार-मंथन का पर्व है

नीमच । मध्य प्रदेश

डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देव संस्कृति ने 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान का श्रीगणेश राजस्थान-मध्य प्रदेश के प्रवास से किया। इसी श्रृंखला में वे गायत्री प्रज्ञापीठ जावद एवं गायत्री शक्तिपीठ नीमच पहुँचे, कार्यकर्त्ताओं को संबोधित कर अभियान की सफलता के लिए उत्साहवर्धन किया।

डॉ. चिन्मय जी ने जावद में क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित किया। उन्होंने वर्तमान समय को विलक्षण एवं परिवर्तनकारी समय बताया। उन्होंने कहा कि ऐसे विशिष्ट समय में जाग्रत् आत्माएँ लोकमंगल के पथ पर चलते हुए आध्यात्मिक प्रगति प्राप्त करती हैं।

गायत्री शक्तिपीठ नीमच पर विशाल जनसभा हुई। इस अवसर पर उन्होंने कुम्भ पर्व को विचार मंथन का पर्व बताया। उन्होंने कहा कि 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान के अन्तर्गत अंतःकरण में चल रहे देवासुर संग्राम में देवत्व की विजय के लिए हमें घर-घर यज्ञ एवं संस्कार तथा सत्साहित्य की स्थापना कराने का बृहद् अभियान चलाना है। गंगाजल स्थापना के साथ लोगों को निकटवर्ती जलस्रोतों की स्वच्छता, संरक्षण, संवर्धन के पुनीत कार्य में सक्रिय भागीदारी के लिए संकल्प कराना है।

संगोष्ठी में भोपाल जोन, उज्जैन उपजोन के प्रतिनिधियों के साथ नीमच, जावद, मनासा, जीरन, रतनगढ़, ग्वालटोली, भोलियावास आदि सक्रिय शाखाओं के परिजन उपस्थित थे।

भगवान के साथ साझेदारी एक विलक्षण सौभाग्य

देवास । मध्य प्रदेश

देवास पहुँचने पर गायत्री प्रज्ञापीठ विजय नगर एवं गायत्री शक्तिपीठ साकेत नगर पर डॉ. चिन्मय जी का भव्य स्वागत हुआ। दोनों प्रज्ञा संस्थानों की गतिविधियों का निरीक्षण करने के बाद डॉ. चिन्मय जी ने अपना संदेश दिया। उन्होंने कहा कि युग निर्माण एक ईश्वरीय योजना है। इसमें जुड़कर भगवान के साथ साझेदारी करने का विलक्षण सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है। गायत्री परिवार के प्रत्येक सदस्य को मां गंगा और गायत्री को घर-घर में स्थापित करने का जो शुभ अवसर मिला है इसमें रत्ती भर भी कमी न रहने पाए, ऐसे प्रयास हम सबको करना चाहिए। कोरोनाकाल के कारण अधिकांश लोग तो कुम्भ का लाभ नहीं ले पाएँगे, लेकिन हमें घर-घर तक कुम्भ को पहुँचाना है। डॉ. चिन्मय जी के इस प्रवास ने नगर के सभी कार्यकर्त्ताओं को एक नई ऊर्जा एवं उमंगों से भर दिया।

डॉ. चिन्मय पड्या जी द्वारा देवास में कार्यकर्त्ताओं को उद्बोधन

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में उभर रहा है युग चेतना का विराट रूप

जनआस्थाओं के पोषण एवं सांस्कृतिक चेतना के उत्थान का अभियान है 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार'

शान्तिकुञ्ज के अन्तेवासी कार्यकर्त्ताओं द्वारा निकाली गई गंगाजल कलश यात्रा

टोलियों को हरी झंडी दिखाते डॉक्टर साहब एवं जीजी

गुरुस्मारकों के समक्ष गुरुसत्ता से आशीर्वाद लेते टोली प्रतिनिधि

मकर संक्रान्ति पर कुम्भ मेले के प्रथम स्नान के साथ 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान का औपचारिक शुभारंभ हो गया। 16 जनवरी को शान्तिकुञ्ज के अंतेवासी कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों द्वारा 251 कलशों की गंगाजल यात्रा निकाली गई। इसके साथ ही श्रद्धेया शैल जीजी, श्रद्धेय डॉक्टर साहब एवं व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा जी ने शान्तिकुञ्ज से हरी झंडी दिखाकर 17 टोलियों को पूरे देश में रवाना किया।

इससे एक दिन पूर्व टोलियों की भावभरी विदाई का कार्यक्रम हुआ। श्रद्धेय द्वय ने टोली प्रतिनिधियों का मंगल तिलक कर उन्हें परिव्राजक के प्रतीक झोला, उपवस्त्र, ब्रह्मदण्ड आदि प्रदान किये। इस अवसर पर उन्होंने टोली सदस्यों को अभियान के लक्ष्य और अनुशासनों की भी याद दिलाई।

टोली प्रशिक्षण सत्र : साधक-सहयोगी तैयार करें

इससे पूर्व दिनांक शान्तिकुञ्ज में दो दिवसीय टोली प्रशिक्षण सत्र आयोजित हुआ। इसे श्रद्धेय द्वय सहित शक्तिपीठ-संगठन प्रकोष्ठ एवं कार्यक्रम विभाग के प्रभारियों ने सम्बोधित किया। शान्तिकुञ्ज व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा जी ने समग्र योजना पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पूज्य गुरुदेव ने सदैव साधना को महत्त्व दिया है। अपना समग्र अभियान साधना पर टिका है। अतः हमें इस अभियान के साथ साधक और सहयोगी तैयार करने पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

हमारा नैतिक दायित्व

कुम्भ भारत की सनातन संस्कृति का अत्यंत महत्त्वपूर्ण पर्व है। इसके माध्यम से जनआस्थाओं के पोषण के साथ समाज को प्रगति और समृद्धि की राह दिखाने में धर्मतंत्र बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है। इस वर्ष परिस्थितियों की प्रतिकूलतावश कुम्भ में भाग लेने भले ही नहीं आ पा रहे हों, लेकिन गायत्री परिवार धर्मतंत्र के दायित्व को अवश्य निभाएगा। यह विराट देव परिवार हर श्रद्धालु के द्वार तक कुम्भ के अमृत को पहुँचाएगा।

- श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

युगचेतना का मत्यावतार

शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयंती में युगशक्ति गायत्री का मत्स्यावतार की तरह विस्तार होता दिखाई दे रहा है। परिवर्तन के इन महान क्षणों में देवशक्तियाँ जाग्रत्‌आत्माओं को झकझोर कर आसुरीशक्तियों को पराभूत करने के लिए उत्साहित हैं। यह अभियान थमेगा नहीं, बढ़ता ही जाएगा।

- श्रद्धेया शैल जीजी

अभूतपूर्व जनउत्साह

मैंने विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण कर इस अभियान के प्रति लोगों का उत्साह देखा है। यह जन आस्थाओं को पोषित कर संस्कृति को नई ऊँचाइयों पर प्रतिष्ठित करने का उत्साह जगाने वाला अभियान है।

- डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति, देसंविवि

पंद्रह लाख तक पहुँची माँग

'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' एक अत्यंत लोकप्रिय अभियान सिद्ध हो रहा है। इसके माध्यम से दस लाख घरों तक कुम्भ और शान्तिकुञ्ज को पहुँचाने का संकल्प लिया गया था, लेकिन अब तक शक्तिपीठ/संगठन/शाखाओं की ओर से शान्तिकुञ्ज के पास लगभग 15,00,000 सेटों की माँग आ चुकी है। आशा है अभियान की सफलता के साथ यह संख्या निरन्तर बढ़ती ही जायेगी और निर्धारित समय सीमा के बाद भी यह अभियान आगे बढ़ता ही जाएगा।

कुम्भ में शान्तिकुञ्ज

कुम्भ के प्रथम स्नान 'मकर संक्रान्ति' के दिन प्रशासन का सहयोग करते हुए शान्तिकुञ्ज के लगभग 150 कार्यकर्त्ताओं ने पुलिस-मित्र की भूमिका निभाई। वे हरिद्वार के भीड़भाड़ वाले अलग-अलग क्षेत्रों तक पहुँचे। वहाँ कोरोनावायरस के संक्रमण को रोकने के लिए आवश्यक नियमों का पालन करने हेतु लोगों को जागरूक किया और पुलिस को व्यवस्था बनाने में सहयोग किया। शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्त्ताओं ने युगऋषि का साहित्य भी वितरित किया।

शान्तिकुञ्ज की स्थापना की स्वर्ण जयंती पर देसंविवि द्वारा शोध पत्र आमंत्रित हैं

युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज की स्थापना के स्वर्ण जयंती वर्ष के इस पुनीत अवसर को ध्यान में रखते हुए देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा अधोलिखित विषयों पर शोध पत्र आमंत्रित किए जा रहे है।

- शान्तिकुञ्ज द्वारा संचालित सप्त आंदोलनों के प्रभाव का अध्ययन जैसे- नशा मुक्ति आंदोलन से लोगों के जीवन में हुए प्रभाव का अध्ययन। आंदोलन से प्रभावित क्षेत्र में नशा, मांसाहार करने वाले लोगों की संख्या एवं जागरूकता का अध्ययन।
  - 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' से लाभान्वित माताओं एवं सन्तानों के जीवन की गुणवत्ता एवं विकास पर अध्ययन।
  - निर्मल गंगा जन अभियान से संदर्भित प्रदेश पर जागरूकता का अध्ययन इत्यादि।
- शान्तिकुञ्ज द्वारा संचालित संस्कारों-विवाह दिन, जन्मदिन, इत्यादि से लाभान्वित लोगों के जीवन एवं परिवार में सहकारिकता, शांति इत्यादि का मनोवैज्ञानिक अध्ययन।
- गायत्री मंत्र, यज्ञ, अनुष्ठान, साधना, स्वाध्याय इत्यादि से व्यक्ति एवं परिवार में हुए प्रभावों का अन्य लोगों से तुलनात्मक अध्ययन।
- शान्तिकुञ्ज द्वारा संचालित शिविर-नौ दिवसीय, युगशिल्पी, इत्यादि के प्रतिभागियों की जीवन की गुणवत्ता पर हुए प्रभाव का अन्य लोगों से तुलनात्मक अध्ययन।
- समयदान एवं अंशदान के जीवन में समावेश से प्रसन्नता एवं आत्मसंतुष्टि पर हुए प्रभाव का अन्य लोगों से तुलनात्मक अध्ययन।
- परमपूज्य गुरूदेव के साहित्य से जीवन में हुए परिवर्तन का अध्ययन।
- बलिवैश्व यज्ञ करने वाले परिवार का एवं न करने वाले परिवार की मानसिकता का अध्ययन।
- शान्तिकुञ्ज की स्थापना, इतिहास, महत्त्व का अध्ययन आदि।

प्रथम तीन शोध पत्रों को क्रमश ₹5000/- ₹3000/-, एवं ₹1000 रुपये की राशि का पुरस्कार दिया जाएगा। दस चयनित शोध पत्रों को देव संस्कृति विश्वविद्यालय की शोध पत्रिकाओं Dev Sanskriti Interdisciplinary International Journal एवं Interdisciplinary Journal of Yagya Research में स्थान मिलेगा। अपना शोध पत्र ईमेल - dsiijournal@dsvv.ac.in पर जून 2021 तक अवश्य जमा करें।

अधिक जानकारी हेतु इस नम्बर 9719253335 पर संपर्क करें।

शान्तिकुञ्ज-देव संस्कृति विश्वविद्यालय के समाचार

सीबीएसई बोर्ड ने गायत्री विद्यापीठ को 'ए प्लस' वर्ग में स्थान दिया

श्रद्धेया जीजी के साथ सफलता के उल्लास को साझा करती शिक्षा समिति की प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या, प्रधानाचार्य श्री सीताराम सिन्हा एवं उपाचार्य श्री विनय शर्मा

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने शान्तिकुञ्ज द्वारा संचालिए गायत्री विद्यापीठ को अपनी सर्वोच्च श्रेणी 'ए प्लस' वर्ग (A+ catagory) आबंटित की है। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सीताराम सिन्हा के अनुसार गायत्री विद्यापीठ ने लगातार पिछले तीन वर्षों से सीबीएसई बोर्ड की परीक्षाओं में शत-प्रतिशत परिणाम दिया है। इसी आधार पर बोर्ड को सर्वोच्च श्रेणी में स्थान मिला है। सीबीएसई बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून ने इस आशय के साथ एक प्रशंसा पत्र दिया है।

> लगातार तीन वर्षों से बोर्ड की परीक्षाओं में मिल रही है शत-प्रतिशत सफलता

विद्यापीठ की प्रबंधन समिति की अध्यक्षा श्रीमती शेफाली पण्ड्या इस उपलब्धि पर अपनी हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसे शिक्षक एवं विद्यार्थियों के कठिन परिश्रम और बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए उनकी लगन का सत्परिणाम बताया।

विद्यापीठ के अभिभावक द्वय श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने गायत्री विद्यापीठ के प्रबन्धक, शिक्षक एवं विद्यार्थियों का उत्साह वर्धन किया। उन्होंने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी द्वारा सन् 1981 में स्थापित इस विद्यापीठ ने समाज को चरित्रवान एवं आदर्शनिष्ठ प्रतिभाएँ दी हैं। आज भी यह उसी उत्साह और तत्परता के साथ बच्चों का समग्र विकास कर रहा है। यहाँ से पढ़े बच्चे पूरे विश्व में अपने अनूठे व्यक्तित्व एवं उदात्त चरित्र के आधार पर अलग ही पहचान रखते हैं।

हर्षोल्लास के साथ मना राष्ट्रीय युवा दिवस

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में युगनायक स्वामी विवेकानंद जी की 158वीं जयंती (12 जनवरी) उत्साहपूर्वक मनाई गयी। इस अवसर पर युवा चेतना गीत के माध्यम से स्वामी जी के विचारों को अपनाने की प्रेरणा दी गई।

अपने संदेश में अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने युवाओं को सद्विचार एवं सत्कर्म को जीवन में अपनाने, लक्ष्य प्राप्ति तक सतत चलते रहने के लिए प्रेरित किया और युवाओं को सफल होने के विविध सूत्र बताये।

देव संस्कृति विवि. के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने स्वामी विवेकानन्द को समाज, संस्कृति के उत्थान के लिए कड़ी मेहनत करने वाले तथा आदर्शों के लिए समर्पित महान योद्धा बताया। कार्यक्रम का संचालन गोपाल शर्मा ने किया।

गायत्री विद्यापीठ व देसंविवि का गौरव

श्रद्धेया जीजी के संग रोहित-शाम्भवी

गायत्री विद्यापीठ, शान्तिकुञ्ज के कक्षा दसवीं के छात्र रोहित यादव ने देहरादून में आयोजित राज्य स्तरीय युवा महोत्सव में योग प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता। इसके साथ ही रोहित का चयन दिल्ली में होने वाली राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता के लिए हो गया। रोहित की बहिन एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय की बीए योग की छात्रा कु. शांभवी यादव ने इसी कार्यक्रम में कांस्य पदक अपने नाम किया। उल्लेखनीय है कि रबर बॉय नाम से विख्यात् रोहित व शांभवी यादव की भाई-बहिन की जोड़ी योग के क्षेत्र में राज्य एवं राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में कई स्वर्ण एवं रजत पदक जीत चुके हैं। वे जीवनदानी कार्यकर्ता श्री रविन्द्र यादव के सुपुत्र हैं।

गायन में अग्रणी रहे

बी.एच.ई.एल., हरिद्वार में जिला स्तरीय युवा महोत्सव के अवसर पर आयोजित गायन प्रतियोगिता में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की बी.ए. की टीम ने उपस्थित जन समुदाय को झूमने पा मजबूर कर दिया। शास्त्रीय गायन में अक्षय कुमार द्वारा राग अहीर भैरव में प्रस्तुत गीत को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। छात्र रजतपाल द्वितीय स्थान पर रहे।

जो लोग आज़ादी के आराम को ज्यादा पसंद करते हैं, स्वतंत्रता के सुख का मूल्य अधिक मानते हैं, वे न आराम ही पाते हैं और न आज़ाद ही रह सकते हैं। - दादा धर्माधिकारी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

मात्र शिक्षण संस्थान नहीं, राष्ट्र के नवोन्मेष का एक सशक्त अभियान

- आधुनिक रोजगारपरक शिक्षा के साथ विद्यार्थियों की मौलिक प्रतिभा को उभारने, व्यक्तित्व को निखारने तथा उसे महानता की ओर अग्रसर कर राष्ट्र-संस्कृति के अग्रदूत के रूप में विकसित करने की अनेक योजनाएँ।
- शिक्षा में प्राचीन गुरुकुल परम्परा का समावेश।
- नालंदा-तक्षशिला जैसे विश्वप्रसिद्ध विश्वविद्यालयों की परम्परा का पुनर्जीवन।

आधुनिक समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप रोजगार उपलब्ध कराने वाले स्नातक, स्नातकोत्तर, डिप्लोमा एवं प्रामाणपत्र पाठ्यक्रम

देश के हर युवा युगसृजेता नागरिक को जीवन के उत्कर्ष एवं समाज के नवनिर्माण की प्रेरणा देने वाले कार्यक्रम

ऐसा एक विश्वविद्यालय देश में होना ही चाहिए जो सच्चे मनुष्य, बड़े मनुष्य, महान मनुष्य, सर्वांगपूर्ण मनुष्य बनाने की आवश्यकता पूर्ण कर सके।

- कुलपिता पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

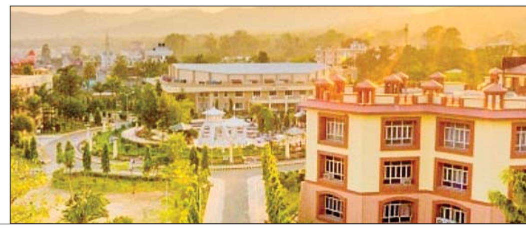

हम देश की युवाशक्ति को समाज एवं संस्कृति के प्रति जागरूक कर उन्हें महानता के पथ पर अग्रसर कर देव संस्कृति-ऋषि संस्कृति के अग्रदूत बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। ऐसे अग्रदूत जो सारे विश्व को शान्ति, प्रगति, समृद्धि की राह दिखा सकें।

- डॉ. प्रणव पण्ड्या, कुलाधिपति

अन्तरराष्ट्रीय उपलब्धियाँ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर देव संस्कृति विवि. का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति यूनेस्को में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए

- एसोशिएशन ऑफ कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटी का प्रतिष्ठित सदस्य
- विश्व के 60 से अधिक अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक एवं शोध संस्थानों के साथ पारस्परिक सहयोग हेतु अनुबंध (MOU)
- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक विकास कार्यों के लिए **UNESCO Chair**
- यूनाइटेड नेशन्स ओर्गेनाइज़ेशन (UNO) में वैश्विक शांति हेतु तैयार किए जा रहे **वर्ल्ड पीस चार्टर निर्माण हेतु प्रतिनिधित्व**
- वर्ल्ड हेल्थ ओर्गेनाइज़ेशन (WHO) में नामित योग विशेषज्ञ प्रतिनिधि
- यूरोप की प्रतिष्ठित **इरास्मस प्लस स्कॉलरशिप** से जुड़ा विश्वविद्यालय
- समग्र शिक्षा के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान हेतु **यूनिवर्सिटी ऑफ द ईयर** से सम्मानित
- IYA द्वारा योग के क्षेत्र में प्रमुख संस्थान की मान्यता
- इन्टरनेशनल डे ऑफ योग की आयोजन कोर कमेटी के सदस्य
- यूनाइटेड नेशन्स सिक्योरिटी काउंसिल के इनिशिएटिव ग्लोबल कोवनेंट ऑफ रिलीजन (GCR) के डाइरेक्टर के रूप में सेवाएँ
- प्रतिष्ठित टेंपलटन पुरस्कार के जज के रूप में प्रतिनिधित्व
- यूनिवर्सिटी ऑफ लातविया के सीनेट के ऑनररी मेम्बर के रूप में प्रतिनिधित्व
- ICCR गवर्निंग काउंसिल के माननीय सदस्य के रूप में प्रतिनिधित्व
- UNESCO में सफलतापूर्वक योग को विश्व धरोहर के रूप में प्रतिष्ठित करने के अभियान में भारत के आमंत्रित AYUSH प्रतिनिधि

प्रमुख आकर्षण

- दिव्य आध्यात्मिक वातावरण • एक्यूप्रेशर पार्क
- वाल ऑफ हीरोज़ • सॉलिड वेस्ट मेनेजमेंट सेंटर
- बायोडाइजेस्टर सेंटर • स्वावलंबन केन्द्र
- राष्ट्रीय स्तर का जूडो प्रशिक्षण केन्द्र • वेधशाला
- अंतर्राष्ट्रीय ताई ची प्रशिक्षण केन्द्र • गौशाला
- संस्कृति ट्रेवल सोल्युशन • यज्ञ रिसर्च सेंटर
- एशिया का प्रथम सेंटर फॉर बाल्टिक करचरल स्टडीज
- संस्कृति सेंटर फॉर इंक्यूबेशन एंड ट्रेनिंग

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. कलाम दीक्षान्त समारोह को संबोधित करते हुए

मान्यताएँ

- UGC से मान्यता प्राप्त (UGC Act, 1956 (Section 2(f) के अंतर्गत)
- ISO 9001:2015 मान्यता प्राप्त
- NAAC से मान्यता प्राप्त
- AIU के विश्वविद्यालय समूह का सदस्य

पाठ्यक्रम

बीएस.सी. (पर्यावरण विज्ञान) **ऑनर्स**
बी.ए. (संस्कृत) **ऑनर्स**
बी.ए. (हिन्दी) **ऑनर्स**
बी.ए. (अंग्रेजी) **ऑनर्स**
बी.ए. (इतिहास) **ऑनर्स**
बी.ए. (मनोविज्ञान) **ऑनर्स**
बी.ए. (संगीत) **ऑनर्स**
बीएस.सी. (इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी)
बी.वोक. (3डी एनीमेशन एण्ड वीएफएक्स)
बी.सी.ए. (बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन)
बी.ए. (पत्रकाति एवं जनसंचार)
बी.बी.ए. (टूज़्मि एण्ड ट्रेवेल मैनेजमेण्ट)
बी.आर.एस. (बैचलर ऑफ रूरल स्टडीज़)
बी.एड. (बैचलर ऑफ एजुकेशन)

प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम

1. धर्म विज्ञान, 2. योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा
3. समग्र स्वास्थ्य प्रबन्धन

डिप्लोमा पाठ्यक्रम

1. डिप्लोमा - विजुअल इफैक्ट्स (कम्पोज़िटिंग)
2. पी.जी. डिप्लोमा - मानव चेतना, योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा
3. पी.जी. डिप्लोमा - धर्म विज्ञान एवं मनोवैज्ञानिक परामर्श

स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम

1. एम.सी.ए. (मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन)
2. एम.फिल. (पत्रकाति एवं जनसंचार)
3. **एम.ए./एम.एससी.** (नैदानिक मनोविज्ञान)
4. **एम.ए./एम.एससी.** (मानव चेतना एवं योग विज्ञान)
5. **एम.ए./एम.एससी.** (व्यावहारिक योग एवं मानव उत्कर्ष)
6. **एम.एससी.** (पर्यावरण विज्ञान)
7. **एम.एससी.** (एप्लाइड मेडिसिनल प्लाण्ट साइंसेज़)
8. **एम.एससी.** (योग एवं समग्र स्वास्थ्य)
9. **एम.बी.ए.** (टूरिज़्म एण्ड ट्रैवेल मैनेजमेण्ट)
10. **एम.बी.ए.** (रूरल मैनेजमेण्ट)
11. **एम.ए.** (व्यावहारिक शिक्षा)
12. **एम.ए.** (पत्रकारिता एवं जनसंचार)
13. **एम.ए.** (भारतीय इतिहास एवं संस्कृति)
14. **एम.ए.** (संस्कृत) 15. **एम.ए.** (हिन्दी)
16. **एम.ए.** (संगीत-गायन) 17. **एम.ए.** (संगीत-वादन)

(नए शैक्षिक सत्र में परिवर्तन संभव है)

हम राष्ट्र, संस्कृति एवं मानवता के उत्थान लिए समर्पित हैं

इस अभियान से अवश्य जुड़िये

बिना किसी सरकारी अनुदान के, केवल आत्मीय परिजनों के सहयोग से संचालित-वित्त पोषित आपका अपना विश्वविद्यालय

संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश लगाकर युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की दैवी योजना में साझेदारी करें, युगधर्म निभायें, अपना जीवन धन्य बनायें। अपने प्रभाव क्षेत्र के लोगों को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रकाशनों, गतिविधियों, कार्यक्रमों, शोधकार्यों, कम्यूनिकेशन से जोड़ें।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के शैक्षिक कार्यक्रमों की विशेषताएँ

- **ज्ञानदीक्षा** के माध्यम से प्रवेश के समय मानवीय गरिमा और जीवन लक्ष्य का बोध
- **दीक्षांत समारोह** के साथ सामाजिक दायित्वों के निर्वहन का बोध व संकल्प
- **सोशल इंटर्नशिप** से समाजसेवा का अनुभव
- **जीवन प्रबंधन** की शिक्षा एवं अभ्यास (आवासीय गतिविधियों में योग, यज्ञ, स्वाध्याय, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का समावेश)
- **वैज्ञानिक अध्यात्मवाद** की शिक्षा से कुरीतियों, अंधविश्वासों को दूर कर आस्था संवर्धन
- **गीता/ध्यान** की कुलाधिपति जी की कक्षाओं से जीवन में महानता का बीजारोपण

Along with Academic (Regular / Distance) & Research Programs

WE -Teach, Train, Educate, Research, Publish, Collaborate
WE DO -Project, Campaign, Counseling, Guidance, Internship, Technology Transfer, Extension Activities
WE Conduct - Camps, Seminar, Workshop, Conference, Webinar, Short Term Training Programms (On-campus, Off-Campus, Offline, Online)

Kindly get in touch with our Research & Publications

Research Journals (Online)
- Dev Sanskriti Interdisciplinary International Journal (DSIIJ)
- Interdisciplinary Journal of Yagya Research (IJYR)
- Indo Baltic Journal (IBJ)

Newsletter (Online) • Renaissance • Dhanvantari • Anahat

CONTACT US - **Website:** www.dsvv.ac.in
Email: info@dsvv.ac.in **Mobile:** (01334) 261367
VISIT US ONLINE - @dsvvofficial
/Dev Sanskriti Vishwavidyalaya

सामाजिक व्याधि को हम बाहरी प्रयत्नों से दूर नहीं कर सकते। सुधार तो मन के ऊपर प्रभाव डालने से ही हो सकता है। - स्वामी विवेकानन्द

हम ईश्वर के राजकुमार हैं

माँगने या मनुहार करने की अपेक्षा उसकी दी हुई अकूत सामर्थ्य को पहचानें, जगायें, विकसित करें, धन्य हो जायें

गोस्वामी तुलसी दास जी की रामचरित मानस में लिखी चौपाई **'बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथहि गावा।।'** हम सभी दोहराते हैं, प्रायः सभी संत समझाते हैं। इस तथ्य और सत्य को जानते हुए भी हम क्यों भगवान से कुछ पाने के लिए याचना व मनुहार करते रहते हैं। क्यों नहीं उस सौभाग्य को पहचानते और अवसर का लाभ उठाते?

विपत्ति में फँसा व्यक्ति जब ईश्वर से प्रार्थना करता है तो उसका औचित्य भी समझ में आता है और उसे भगवान से सहायता मिलती भी देखी जाती है, लेकिन सहजता से जीवन यापन करने वाले लोग भी जब अधिक धन-सम्पत्ति के लिए ईश्वर के सामने गिड़गिड़ाते हैं, उनसे पक्षपात की आशा रखते हैं, तो यह उनकी नासमझी ही है। सामान्य लोग ही नहीं, तथाकथित संत, महात्मा, ज्ञानी भी इस तरह के लालच देकर भक्तों को अपने जाल में फँसाते और दुकान चलाते दिखाई देते हैं।

भलाई इसी में है कि समझदारी अपनाई जाय। भगवान से मिली अकूत सामर्थ्य का मूल्य समझा जाय। उन्होंने मनुष्य को अन्य प्राणियों से अधिक सामर्थ्य प्रदान करते हुए आशा रखी थी कि वह सृष्टि संचालन में उसका सहयोगी बनेगा। स्वयं सुखी रहेगा और दूसरों के सुख का कारण बनेगा। लेकिन मानव अपनी दुर्बुद्धि के कारण स्वयं दुःखी है, हताश-निराश है। अच्छा हो हम मुफ्त में या कुछ दान-धर्म के बदले में बड़ी कामनाएँ करने के व्यामोह से उबरें, ईश्वरनिष्ठ जीवन जीते हुए विभिन्न आध्यात्मिक उपचारों के माध्यम से भगवान से माँगने के बजाय 'मानव में देवत्व जगाने' और 'धरती को स्वर्ग बनाने के लिए प्रयत्नशील हो।

नवसृजन की ईश्वरीय योजना में साझेदारी के कुछ प्रभावशाली सूत्र

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का पूरा जीवन ही ईश्वर के साथ साझेदारी का प्रतीक रहा है। उन्होंने जन-जन को ईश्वर के साथ साझेदारी के जीवन-सिद्ध सूत्र बताये हैं जो सार्वभौम हैं, सबके लिए कल्याणकारी हैं।

नवयुग की संरचना के सर्वमान्य सूत्र
युग निर्माण सत्संकल्प
(नित्य दोहरायें, जीवन में अपनायें)

1. हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
2. शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्म संयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
3. मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाये रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
4. इंद्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का सतत अभ्यास करेंगे।
5. अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
6. मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
7. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
8. चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
9. अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
10. मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
11. दूसरों के साथ वह व्यवहार न करेंगे, जो हमें अपने लिए पसंद नहीं।
12. नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
13. संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान एवं पुरुषार्थ का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
14. परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
15. सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
16. राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।
17. मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है। इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे तो युग अवश्य बदलेगा।
18. हम बदलेंगे, युग बदलेगा। हम सुधरेंगे, युग सुधरेगा। इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

आस्तिक जीवन
जैसा कि प्रथम पृष्ठ के आलेख से स्पष्ट है कि हमें अपने सृजेता (ईश्वर) के प्रति कृतज्ञ एवं आस्थावान होने की साधना करनी चाहिए। इससे जीवन में अनुशासन सधता है, व्यक्तित्व विकास में बाधक अहंकार और उच्छृंखलता से बचने में बड़ी सहायता मिलती है। अनास्था ही इस युग का सबसे बड़ा संकट है, जिसने तमाम विग्रह एवं समस्याएँ खड़ी की हैं। आस्था हो, लेकिन अंधविश्वास नहीं। सत्प्रवृत्तियाँ अपनायें, कुरीतियों से दूर रहें।

ईश उपासना
विशाल वृक्ष के सहारे एक निर्बल लता भी आकाश चूमने लगती है। उपासना का भाव भी यही है। ईश्वर केवल प्रतीक या प्रतिमा नहीं है, वह तो आदर्शों का समुच्चय है, जैसे-शिवजी का चंद्रमा मन-मस्तिष्क को शीतल बनाये रखने का, उनके मस्तक पर बहती गंगा पवित्रता और सद्विचारों की, गले के साँप समाज के हर वर्ग के साथ मैत्री और सामंजस्य का भाव रखने, अपने प्रेम भरे व्यवहार से उन्हें अपना सहयोगी बनाने का आदि...। अपने इष्ट के आदर्शों का स्मरण करते हुए ईश्वर की उपासना अवश्य करें।

जीवन साधना
अच्छी सेहत के लिए व्यायाम के सूत्र पढ़े और बताये तो जा सकते हैं, लेकिन स्वास्थ्य तो उनके नियमित अभ्यास से ही प्राप्त होता है। उसी प्रकार सद्गुणों को जीवन में धारण करने की साधना जरूरी है। बुराइयों को दूर करने की और अच्छाइयों को अपनाने की साधना जीवन में संकल्पपूर्वक हर क्षण होनी चाहिए।

लोक आराधना (सेवा)
स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कहा था, ''पीड़ित मानवता में ही भगवान बसता है।'' यह शिक्षा सभी देते हैं। उनकी सेवा कीजिए, केवल साधन उपलब्ध कराने का नहीं, उनके जीवन को ऊँचा उठाने का प्रयास कीजिए। सेवा मनुष्य में दया, प्रेम, उदारता जैसे सद्गुणों का विकास करती है। ईश्वर की प्राप्ति सही मायनों में इन्हीं गुणों के रूप में होती है।

स्वाध्याय-सत्संग
अपने जीवन लक्ष्य के सतत स्मरण के लिए अच्छे विचारों के सान्निध्य में रहना परम आवश्यक है। इसलिए अच्छी पुस्तकों के स्वाध्याय का नियमित क्रम बनायें। प.पू. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी जैसे लोकमंगल के लिए समर्पित अनेक महापुरुषों का साहित्य आपके मार्गदर्शन के लिए उपलब्ध है। केवल पढ़ें ही नहीं, अच्छे सूत्रों का निरंतर चिंतन-मनन भी करें।

हम उन्हें ही अपना जीवन-आदर्श मानें, जैसे हम बनाना चाहते हैं। वैसे ही महापुरुषों के जीवन का अनुसरण करें।

समयदान-अंशदान
अपने समाज के उत्थान के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ व धन-साधन का एक अंश समाज के लिए अवश्य लगाते रहना चाहिए। इसका पुण्यफल अनंत गुना होकर जीवन को अलौकिक सुख-शांति प्रदान करता है।

शान्तिकुञ्ज की इण्टरनेट सेवाओं से जुड़िये

@awgpofficial /shantikunjvideo

(समस्त आधिकारिक संचार हेतु, मार्गदर्शन, पर्व आयोजन, विभिन्न कार्यक्रम)

Website: www.awgp.org **Email:** shantikunj@awgp.org

कुम्भ महापर्व, हरिद्वार-2021 का पुण्य लाभ लें

कुम्भ में दान-पुण्य का बड़ा महत्त्व है। गायत्री परिवार द्वारा चलाया जा रहा 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान आस्था संकट निवारण एवं ज्ञानदान की दृष्टि से उच्च कोटि का पुण्यदायी कार्य है। भागीदार बनें, पुण्य लाभ लें। आप अपनी सहयोग राशि शांतिकुञ्ज के निम्न खातों में जमा करा सकते हैं।

खाते का नाम : श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (PAN No: AAATV1261C)

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया :	10876858311 (11 अंक)	IFSC Code : SBIN0002350
पंजाब नेशनल बैंक :	3129010100000018 (16 अंक)	IFSC Code : PUNB0469400
एक्सिस बैंक :	156010100013846 (15 अंक)	IFSC Code : UTIB0000156
एचडीएफसी बैंक :	09431450000157 (14 अंक)	IFSC Code : HDFC0000943
आईसीआईसीआई बैंक:	023901000010 (12 अंक)	IFSC Code : ICIC0000239
बैंक ऑफ बरोडा :	09260100004639 (14 अंक)	IFSC Code : BARB0HARDWA

राशि हस्तान्तरण की जानकारी व्हॉट्सएप : 7817000926 अथवा ई-मेल **donation@awgp.org** पर दें।

'सबके लिए सद्बुद्धि-सबके लिए उज्ज्वल भविष्य' के लिए व्यक्तिगत एवं सामूहिक प्रार्थना - गायत्री उपासना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका जीवन एक समुद्र की बूँद की तरह है, जो समाज में परस्पर सहयोग-समन्वय से ही रह सकता है। जैसे समुद्र की बूँद लहरों के ऊठने-गिरने के साथ उठती और गिरती हैं, उसी तरह हमारी स्थिति भी है। समाज दुःखी रहे, चारों तरफ हा-हाकार मची हो तो हम व्यक्ति कभी सुखी नहीं रह सकता, चाहे वह कितना भी सुविधा सम्पन्न क्यों न हो। अपना घर अत्यंत सुंदर हो और बाहर की गलियाँ गंदी हों, पास में ही दुर्गंधयुक्त तालाब हो तो क्या उसकी गंदगी प्रभावित नहीं करेगी? अतः मनुष्य को अपने उत्थान के प्रयास के साथ-साथ अपने समाज को उठाने में भी पूरा-पूरा सहयोग करते हुए अपनी नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरा करना आवश्यक है।

> गायत्री सार्वभौम है। फिर भी किसी को संस्कारवश इसे जपने में संकोच होता हो तो मैंने नई गायत्री बना दी है, वह है-''सबके लिए सद्बुद्धि-सबके लिए उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना।''
> – परम पूज्य गुरुदेव

अखिल विश्व गायत्री परिवार ऐसे ही देवमानवों का विशाल परिवार है जो सारे विश्व में एक व्यापक परिवर्तन के लिए कार्य कर रहा है। इसमें हर व्यक्ति का साथ-सहयोग मिले, संगठित प्रयास हों तो परिस्थितियों को बदलते देर नहीं लगेगी।

कुछ व्यावहारिक पक्ष
आज की सारी समस्याएँ दुर्बुद्धि से ही उपजी हैं। अतः सभी गायत्री उपासना अवश्य करें, केवल स्वयं के लिए सद्बुद्धि पाने की कामना से नहीं, बल्कि **'सबके लिए सद्बुद्धि-सबके लिए उज्ज्वल भविष्य'** की प्रार्थना के साथ। गायत्री किसी धर्म विशेष की नहीं, सार्वभौम प्रार्थना है। इसे सभी अपनी व्यक्तिगत उपासना में जोड़ सकते हैं। गायत्री मंत्र जप करने में संकोच हो तो अपनी उपासना के साथ मन में यह भाव रखें, ''हे परमात्मा! हम सबको सद्बुद्धि दें, उज्ज्वल भविष्य के मार्ग पर आगे बढ़ायें। इससे भी गायत्री मंत्र जप जैसा पुण्य लाभ पाया जा सकता है।

सामूहिक प्रयास हों
समाज व्यापक परिवर्तन संगठित प्रयासों से ही होते हैं। अतः उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना के सामूहिक कार्यक्रम भी हर जगह चलने चाहिए। सुविधानुसार सप्ताह में एक बार या देवस्थानों पर होने वाली पूजा-प्रार्थना के साथ इस क्रम को शामिल किया जा सकता है। इससे एक सभी के विचार और भाव बदलते जायेंगे, साथ ही यह प्रयास सूक्ष्म जगत के विषाक्त वातावरण को भी शुद्ध करने में बड़े उपयोगी सिद्ध होंगे।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार सम्पादन : फोन 9258369413
email : news.shantikunj@gmail.com

Publication date: 27.1.2021
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23